हरिभूमि
# महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार, 12 अक्टूबर 2025

11 बाजरा एमएसपी पर खरीदने और खाद-बीज...

12 आईपीएस वाई पूरन कुमार की मौत पर संगठनों ने...

किसान बोले..फसल बिजाई का समय नजदीक नहीं मिल रही खाद

# सरसों की बिजाई: डीएपी खाद नहीं मिलने पर आक्रोशित किसानों ने अनाज मंडी गेट बंद कर जताया कड़ा विरोध

**किसानों का आरोप प्राइवेट दुकानों पर खाद के साथ अन्य पैकेट खरीदने का बनाया जा रहा दबाव**

हरिभूमि न्यूज ⏭ मंडी अटेली

सरसों की बिजाई के बीच डीएपी खाद की कमी ने शनिवार को अटेली क्षेत्र के किसानों को आक्रोशित कर दिया। सुबह से लंबी लाइनों में लगे किसानों ने दोपहर तक खाद न मिलने पर अनाज मंडी गेट बंद कर विरोध प्रदर्शन रोष जताया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और किसानों को समझकर गेट खुलवाया। स्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए नारनौल पुलिस लाइन से अतिरिक्त बल बुलाया गया।

### पारदर्शी की जाए वितरण व्यवस्था

किसानों का कहना था कि वे सुबह से कोऑपरेटिव सोसायटी के बाहर लाइन में खड़े थे, लेकिन दोपहर डेढ़ बजे के बाद ही मशीन पर एंट्री शुरू हुई। तब जाकर खाद वितरण शुरू हुआ। देरी से वितरण के कारण किसानों में भारी नाराजगी देखी गई। किसानों ने आरोप लगाया कि तीन जगह खाद उपलब्ध होने के बावजूद वितरण केवल मुख्य समिति कार्यालय से किया जा रहा है, जिससे वहां भीड़ बढ़ रही है। प्राइवेट दुकानों पर खाद होने के बावजूद किसानों से अन्य पैकेट जबरन खरीदने के लिए दबाव बनाया जा रहा है। किसानों ने प्रशासन से मांग की कि वितरण व्यवस्था पारदर्शी किया जाए तथा यह जानकारी सार्वजनिक की जाए कि किस केंद्र पर कितना खाद उपलब्ध है।

मंडी अटेली। अनाज मंडी में डीएपी खाद लेने के लिए लाइनों में लगे किसान। फोटो : हरिभूमि

### सुबह चार बजे लाइन में लगे किसान

किसानों ने बताया कि रबी की फसल की बिजाई का समय आ गया है, लेकिन डीएपी खाद नहीं मिल रहा है। ऐसे में वे फसल बिजाई कैसे करेंगे। वहीं खाद नहीं मिलने से गुस्साए लोगों ने प्रदर्शन भी किया। किसानों ने अटेली की सहकारी समिति के बाहर जमकर विरोध प्रदर्शन कर अपनी नाराजगी जाहिर की। किसानों का कहना है कि वे सुबह चार बजे से लाइन में लगे हुए थे, लेकिन जब वितरण का समय आया, तो कर्मचारियों ने कहा कि मशीन पर खाद का स्टाक नहीं चढ़ा है। जिस पर किसानों ने मंडी गेट पर ताला लगा दिया। इसके बाद उच्च अधिकारियों ने स्टाक को चढ़वाकर खाद वितरित शुरू करवाया।

मंडी अटेली। अटेली अनाज मंडी गेट खुलवाते पुलिस कर्मचारी।

### क्या कहते हैं हैफेड मैनेजर

इस बारे में हैफेड मैनेजर सत्येंद्र यादव से बात की गई, तो उन्होंने बताया कि कुछ किसानों का पीओएस मशीन में ऑनलाइन डाटा उपलब्ध नहीं था। जिसके चलते थोड़ी दिक्कत का सामना करना पड़ा। दोपहर एक बजे बाद पीओएस मशीन पर किसानों का ऑनलाइन डाटा उपलब्ध हो गया था। इसके बाद किसानों को सुचारू रूप से खाद मिलना शुरू हो गया था।

## खबर संक्षेप

### खेड़की के श्मशान घाट में युवक ने लगाया फंदा

**महेंद्रगढ़।** गांव खेड़की में एक युवक ने गांव के श्मशान घाट में जाल के एक पेड़ पर फांसी लगाकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। जानकारी मुताबिक करीब 32 वर्षीय शमशेर ने पेड़ पर लटककर फांसी लगा ली, जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस को दिए बयान में बाबूलाल यादव वासी गांव मुंडायन ने बताया कि उसके 32 वर्षीय भांजे खेड़की निवासी शमशेर ने श्मशान घाट में फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली है। उन्होंने पुलिस को लिखित शिकायत देकर शव का पोस्टमार्टम कराने तथा मामले की गहनता से जांच करने की मांग की। शमशेर अविवाहित था।

### युवक ने फंदा लगाकर की जीवनलीला समाप्त

**मंडी अटेली।** गांव बिहाली में 31 वर्षीय रोहित ने फंदा लगाकर जीवनलीला समाप्त कर ली। प्राप्त जानकारी के अनुसार रोहित दुबई में एक कंपनी में कार्य कर रहा था। अभी फिलहाल वह घर आया हुआ था। रोहित की मौत की सूचना मिलते ही ग्रामीण बड़ी संख्या में ग्रामीण जमा हो गए। मामले की सूचना पुलिस को दी गई। अटेली पुलिस ने मृतक युवक का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया। आत्महत्या करने का कारण पता नहीं चल पाया है।

### दौगड़ा अहीर गांव में रक्तदान शिविर आज

**मंडी अटेली।** गांव दौगड़ा अहीर में 12 अक्टूबर को छठे स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए शक्ति सिंह ने बताया कि यह शिविर सीताराम मंदिर में सुबह 10 से दोपहर एक बजे तक लगाया जाएगा।

### गाड़ी में तोड़फोड़ करने के मामले आरोपित काबू

**नारनौल।** आपसी कहासुनी को लेकर गाड़ी में तोड़फोड़ करने के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना अटेली पुलिस ने एक और आरोपित को गिरफ्तार किया है। जिसकी पहचान अंकित वासी सुरानी के रूप में हुई है। पुलिस पांच आरोपितों को पहले गिरफ्तार कर चुकी है। शिकायतकर्ता प्रवीन ने बताया कि वह आईटीआई की पढ़ाई करता है। उसने बताया कि दो अगस्त को अपने उसके दोस्त के साथ गाड़ी लेकर अटेली में म्यूजिक सिस्टम ठीक कराने के लिए गया था। जब रेवाड़ी अटेली रोड पर पहुंचे तो पीछे से एक कैम्पर गाड़ी, जिस पर नम्बर प्लेट नहीं थी। जिसके चालक ने अचानक उसकी गाड़ी के आगे लगाकर रास्ता बंद किया।

*अंतिम टेल तक आसानी से पहुंच सकेगा नहरी पानी, 11 करोड़ रुपये आएगी लागत*

## नए पंप हाउस लगाने का निर्माण कार्य शुरू

# नारनौल ब्रांच के तीन पंप हाउसों की बढ़ेगी क्षमता

एनबी-चार, एनबी-पांच व एनबी छह पंप हाउस की बढ़ेगी क्षमता

*पुराने पंपों की सीमित क्षमता के कारण नहर में पर्याप्त दबाव नहीं बन पाता था। इसका सीधा असर फसलों पर पड़ता था तथा नांगल चौधरी क्षेत्र के कई गांवों के किसान जबूरन बारिश पर निर्भर रहते थे।*

महेश कुमार ⏭ नारनौल

जिले के किसानों के लिए राहत भरी खबर है। अब उन्हें अपनी फसलों की सिंचाई के लिए नहरी पानी की किल्लत से जूझना नहीं पड़ेगा। सिंचाई विभाग के मैकेनिकल डिवीजन की ओर से ब्रांच के तीन पंप हाउस एनबी-चार, एनबी-पांच व एनबी-छह की क्षमता बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर आधुनिकीकरण कार्य शुरू हो गया है। इस परियोजना पर करीब 11 करोड़ रुपये की लागत आएगी। नए पंप लगने के बाद जिले के अंतिम छोर तक भी पानी की आपूर्ति निर्बाध रूप से की जा सकेगी।

बता दें कि पिछले कई वर्षों से ब्रांच की अंतिम टेल पर पानी नहीं पहुंचने की शिकायतें किसानों की ओर से लगातार उठाई जाती रही हैं। पुराने पंपों की सीमित क्षमता के कारण नहर में पर्याप्त दबाव नहीं बन पाता था। इसका सीधा असर फसलों पर पड़ता था तथा नांगल चौधरी क्षेत्र के कई गांवों के किसान जबूरन बारिश पर निर्भर रहते थे। किसानों की ओर से लगातार नहरी पानी उपलब्ध कराने जाने की मांग उठाई जा रहीं थी। किसानों की मांग को देखते हुए जवाहरलाल कैनाल का पक्का करने का कार्य पहले ही शुरू हो चुका है तथा अब तीन पंप हाउस में 180 क्यूसिक के 11 नए पंप लगने के बाद आसानी के जिले के अंतिम छोर तक पर्याप्त नहरी पानी पहुंच सकेगा।

नारनौल। ब्रॉच के पंप हाउस में लगाए गए नए पंप व मोटर। फोटो : हरिभूमि

### एनबी-चार पंप हाउस की 700 क्यूसिक क्षमता

*11 करोड़ रुपये की लागत से एनबी-चार व एनबी-पांच पंपहाउस पर 60 क्यूसिक के चार-चार नए पंप तथा एनबी-छह पंपहाउस पर 60 क्यूसिक के तीन नए पंप, केबल, मोटर व पैनल लगाया जाएगा। फिलहाल एनबी-चार पंप हाउस की 700 क्यूसिक क्षमता है तथा 600 से 650 क्यूसिक पानी चलता है। नए पंप लगने के बाद 240 क्यूसिक अतिरिक्त पानी चल सकेगा। वहीं एनबी-पांच पंप हाउस की 600 क्यूसिक क्षमता है, लेकिन भी क्षमता से कम पानी चलाया जा रहा है। एनबी-पांच में चार पंप लगने के बाद 240 क्यूसिक क्षमता बढ़ जाएगी। इसके अलावा एनबी-छह पंप हाउस की 500 क्यूसिक क्षमता है। वहीं तीन पंप, केबल, मोटर व पैनल लगने के बाद पंप हाउस की 180 क्यूसिक क्षमता बढ़ जाएगी।*

### अंतिम छोर तक पानी पहुंचाने के लिए प्रयासरत

सिंचाई विभाग की ओर से जिला के अंतिम छोर तक नहरी पानी पहुंचाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे है। काफी हद विभाग के प्रयास सफल भी हुए है। जवाहरलाल कैनाल को गांव सिहमा से नांगल चौधरी तक पक्का किया जा चुका है तथा अब एनबी-एक से एनबी-तीन तक ब्रांच को पक्का किया जाएगा जा रहा है। नहर को पक्का करने के बाद काफी हद पानी का रिसाव रूकेगा तथा आसानी से जिले के अंतिम छोर तक पानी पहुंच सकेगा। सिंचाई विभाग की ओर से गांव झगड़ौली से नारनौल तक नहर पर 30 पुल बनाए गए है। विभाग की ओर से ग्रामीणों की मांग को देखते हुए नहर पर पांच नए पुल बनाए गए है, ताकि नहर के साथ लगते गांवों के लोग आसानी से एक ओर से दूसरी ओर जा सकें। इसके अलावा पुराने पुलों को रिपेयर करने में करीब पांच करोड़ रुपये खर्च किए गए है। गांव मेघनवास व बचीनी को जोड़ने वाले मार्ग के अलावा बुचौली से नांगल हरनाथ, खामपुरा से रामपुरा, खासपुरा से हुडीना तथा दौंगड़ा से कौथल की ओर जाने वाले मार्ग में नए पुल बनाए गए है।

### ब्रांच की क्षमता बढ़ेगी

करीब 11 करोड़ रुपये की लागत से एनबी-चार व एनबी-पांच पंप हाउस पर 60 क्यूसिक के चार-चार नए पंप तथा एनबी-छह पंप हाउस पर 60 क्यूसिक के तीन नए पंप, केबल, मोटर व पैनल लगाए जाएंगे। नए पंप लगाने का कार्य शुरू हो चुका है। निर्माण कार्य पूरा होने के बाद ब्रांच की क्षमता बढ़ेगी तथा आसानी जिले के अंतिम छोर तक नहरी पानी पहुंच सकेगा।

-आशुतोष यादव, एक्सईएन
मैकेनिकल डिवीजन, सिंचाई विभाग

### कार की टक्कर से बाइक सवार की मौत

**महेंद्रगढ़।** डालनवास में वैग्रार कार की टक्कर से बाइक सवार की मौत हो गई। पुलिस ने फरार वैग्रार कार चालक के खिलाफ केस दर्ज करने उपरांत शव का महेंद्रगढ़ अस्पताल से पोस्टमार्टम करवाकर उसे परिजनों को सौंप दिया। डालनवास निवासी प्रदीप कुमार को घर से लगभग 20 फुट की दूरी पर था, तब वैग्रार कार ने टक्कर मार दी, जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस को दिए बयान में डालनवास निवासी सुरेंद्र ने बताया कि 10 अक्टूबर को प्रातः लगभग 11:30 बजे फौजी धर्मकांटा पर अपनी कड़बी तुलवाकर अपने भतीजे प्रदीप कुमार के साथ जाने के लिए इंतजार में खड़ा था। भतीजा प्रदीप अपनी मोटरसाइकिल पर सवार होकर हमारे से घर से उसे लेने आ रहा था। जब वह उससे करीब 20 फुट दूरी पर था, तब अचानक महेंद्रगढ़ की तरफ से सफेद रंग की वैग्रार कार का चालक अपनी कार को बहुत तेज गति एवं गफलत से चलाता हुआ आया और देखते ही देखते उसके भतीजे प्रदीप की मोटरसाइकिल को पीछे से टक्कर मार दी। जिससे भतीजा उछलकर रोड पर गिर गया, जबकि मोटरसाइकिल काफी दूर तक घिसटती रही। सरकारी अस्पताल में चिकित्सकों ने उसके भतीजे को मृत घोषित कर दिया। उन्होंने बताया कि उसके भतीजे प्रदीप ने आईटीआई कर रखी थी और वह बिजली का काम करता था। वह परिवार में अकेला ही कमाने वाला था और उसकी दो छोटी-छोटी लड़कियां हैं।

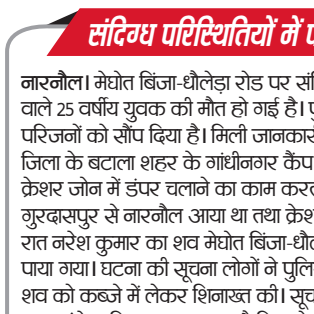

### हृदय गति रुकने से पुलिस कर्मी की मौत

**महेंद्रगढ़।** छाजूपुरम कॉलोनी में रात को खाना खाकर सोया करीब 57 वर्षीय पुलिस कर्मी सोया ही रह गया। मृतक के पुत्र का कहना है कि उसके पिता का निधन हृदय गति से हुआ है। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर उसे परिजनों को सौंप दिया। मृतक रेवाड़ी के पुलिस कंट्रोल रूम में लगा हुआ था। सिहोर निवासी संदीप ने बताया कि उसके पिता सुरेश कुमार हरियाणा पुलिस में रेवाड़ी पुलिस कंट्रोल रूम में तैनात थे तथा इन दिनों महेंद्रगढ़ की छाजूपुरम कॉलोनी में मकान बनाकर रह रहे थे। उसके पिता सुरेश 9 अक्टूबर को रेस्ट पर आए हुए थे। तब उसके पिता खाना खाकर रात को सो गए थे। जब 10 अक्टूबर की सुबह 6 बजे वह चाय देने गया तो उसके पिता जागे नहीं। इस पर उन्हें सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहां डाक्टर ने उसके पिता को चेक करने उपरांत मृत घोषित कर दिया। उसने तसल्ली कर ली है कि उसके पिता की मौत हृदय गति रूकने से हुई है। इसमें किसी का कोई कसूर नहीं है। पिता के शव का पोस्टमार्टम कराया जाए। मृतक अपने पीछे दो बेटे छोड़ गया है।

### संदिग्ध परिस्थितियों में पंजाब के युवक की मौत

**नारनौल।** मेघोत बिंजा-धौलेड़ा रोड पर संदिग्ध परिस्थितियों में पंजाब के रहने वाले 25 वर्षीय युवक की मौत हो गई है। पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है। मिली जानकारी के अनुसार पंजाब के गुरदासपुर जिला के बटाला शहर के गांधीनगर कैंप निवासी 25 वर्षीय नरेश कुमार धौलेड़ा क्रेशर जोन में डंपर चलाने का काम करता था। वह कुछ दिन पहले ही गुरदासपुर से नारनौल आया था तथा क्रेशर जोन में ही रहने लगा था। शुक्रवार रात नरेश कुमार का शव मेघोत बिंजा-धौलेड़ा रोड पर संदिग्ध अवस्था में पड़ा पाया गया। घटना की सूचना लोगों ने पुलिस को दी। पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त की। सूचना मिलने के बाद मृतक परिजन मौके पर पहुंचे। परिजन का कहना है कि नरेश अक्सर बीमार रहता था, हो सकता है कि उसी वजह से उसकी मौत हुई हो।

### सड़क हादसे में बुजुर्ग की मौत, दो घायल

**अटेली मंडी।** कस्बे के गुजरवास मोड़ पर हुए दर्दनाक सड़क हादसे में 68 वर्षीय बुजुर्ग की मौत हो गई है। जबकि दो लोग घायल हो गए हैं। जानकारी के अनुसार अटेली मंडी निवासी राजकमल पुत्र शीशराम अपनी साइकिल पर घर जा रहे थे। जब वह पुराने बस स्टैंड पहुंचे तो उनकी साइकिल को दो बाइक सवार युवकों ने टक्कर मार दी। हादसे में राजकमल की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद बाइक सवार दोनों युवक मौके से फरार हो गए। पुलिस ने मृतक के शव को सिविल अस्पताल अटेली में पोस्टमार्टम के लिए रखवा दिया है। दोनों घायल बाइक सवार युवकों की पहचान रिंकू और राहुल पुत्र वाल्मीकि निवासी अटेली मंडी के रूप में हुई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

## बाजार में तैयारी पूरी: सोनपापड़ी, बर्फी व बूंदी लड्डू की मांग बढ़ी

# अहोई अष्टमी पर्व कल, बच्चों की दीर्घायु के लिए माताएं रखेंगी व्रत

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

करवा चौथ व्रत के बाद अब अहोई अष्टमी का पर्व धूमधाम से मनाने की तैयारी जोरों पर है। बाजार में पूजा सामग्री, सजावट के सामान और साज-सज्जा की वस्तुओं की खरीदारी के लिए महिलाओं की भीड़ उमड़ रही है। हर तरफ उत्सव का माहौल है। इस वर्ष अहोई अष्टमी 13 अक्टूबर को मनाई जाएगी। हिंदू पंचांग के अनुसार, कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को यह व्रत किया जाता है। इस दिन महिलाएं संतान की दीर्घायु, सुख-समृद्धि और अच्छे स्वास्थ्य की कामना से व्रत रखती हैं। शाम को अहोई माता की पूजा की जाती है और तारों के दर्शन के बाद व्रत खोला जाता है। धार्मिक मान्यता है कि अहोई माता की पूजा करने से संतान के जीवन से संकट दूर होते हैं।

शहर के प्रमुख बाजार शंकर मार्केट, बालाजी चौक, 11 हट्टा बाजार के दुकानदारों ने पूजा सामग्री, दीए, अहोई माता की तस्वीरें, नई साड़ियां और सजावट का सामान सजा रखा है। मिठाई की दुकानों पर भी भीड़ नजर आ रही है। दुकानदारों ने बताया कि दुकान पर महिलाओं की भीड़ बढ़ रही है।

पूजा के लिए अहोई माता की तस्वीरें, कलश, चुनरी के सामान की सबसे ज्यादा बिक्री हो रही है। इसके अलावा अहोई अष्टमी पर खासतौर से सोनपापड़ी, बर्फी और बूंदी लड्डू की मांग बढ़ गई है।

### अहोई अष्टमी की करें पूजा

*श्री ठाकुर जी मंदिर के पंडित विकास ने बताया कि अहोई अष्टमी के दिन महिलाएं कथा का पाठ जरूरी करें। इसी के साथ जब आप अहोई अष्टमी की पूजा करें, तो इस दौरान अपने पुत्र या पुत्री को अपने साथ बिठाएं। पूजा की समाप्ति के बाद सबसे पहले बच्चों को प्रसाद दें। अहोई अष्टमी के दिन अपने भोजन का कुछ हिस्सा गाय और बछड़े को जरूर खिलाना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि इस उपाय को करने से अहोई प्रसन्न होती हैं और साधक को सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देती हैं। इसी के साथ इस दिन पर तुलसी का पौधा लगाना भी शुभ माना जाता है। अहोई अष्टमी के दिन अहोई माता की पूजा में एक कटोरी में चावल भरकर रख दें। अब इन चावलों पर एक रुपये का सिक्का रखें। इसके बाद माता पार्वती की विधिवत पूजा करें। पूजा समाप्त होने के बाद इस सिक्के को अपनी संतान को दे दें। वहीं चावल की कटोरी को मंदिर में दे आएं। ऐसा माना जाता है कि इस उपाय को करने से आपकी संतान के जीवन की समस्याएं समाप्त हो सकती हैं।*

### बच्चे की लंबी उम्र व वंश बढ़ाने के लिए होता है व्रत

गृहणी रितू भोल्यान, भारती, कमला, कविता, निशा, मनीषा, पिंकी, अनीता आदि ने बताया कि हम हर साल यह व्रत करती हैं। बच्चे की लंबी उम्र के लिए अहोई माता से प्रार्थना करती हैं। इस बार नए कलश और दिए खरीदने बाजार आई हैं। इस बार बाजार में सजावट का नया ट्रेंड है। डिजिटल अहोई माता की फोटो फ्रेम और सुंदर थाली सेट खूब बिक रहे हैं। अहोई अष्टमी का व्रत माताएं अपनी संतान की लंबी आयु और स्वास्थ्य के लिए करती हैं। यह व्रत करवा चौथ के कुछ दिन बाद आता है। अहोई माता को देवी पार्वती का रूप माना जाता है।

## स्टेप अप एसआईपी : बच्चे की पूरी पढ़ाई फ्री, फिर भी 50 लाख बचेंगे

भविष्य | बिजनेस डेस्क

अगर आपको भी बच्चे की पढ़ाई और अन्य खर्च से समय रहते मुक्ति पानी है तो आपके लिए स्टेप अप एसआईपी एक अहम निवेश का विकल्प साबित हो सकती है। इसके जरिये निवेश करने से आपको बड़ी राहत मिलेगी। स्कूल की बढ़ती फीस और हायर एजुकेशन की चिंता अक्सर अभिभावकों को सताती हैं। निवेश के जानकारों का कहना है कि समय रहते इस पर ध्यान दिया जाए तो इस टेंशन को 'बाय-बाय' कहा जा सकता है। इसके लिए आपको एसआईपी के जरिये निवेश करना होगा और इसे बढ़ाते जाना होगा। यह योजना आपके बच्चे की शिक्षा का खर्च उठा सकती है। साथ ही, बच्चे के 22 साल का होने तक आपके पास 50 लाख रुपये से ज्यादा बच सकते हैं। इसके लिए आपको बच्चे के जन्म से हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू करनी होगी। इसे 10 साल तक हर साल 10% बढ़ाना होगा। 10 साल बाद कॉन्ट्रिब्यूशन बंद कर देना है। फिर बच्चे की 10 से 22 साल की उम्र तक हर महीने 25,000 रुपये निकालने हैं। यह सब बिना किसी एजुकेशन लोन के संभव है।

### यह दिया सुझाव

99% माता-पिता बिना किसी स्कीम के स्कूल फीस पर लाखों रुपये खर्च करते हैं। 'क्या हो अगर 10 साल की एसआईपी आपके बच्चे की शिक्षा को लगभग मुफ्त में फंड कर सके... और फिर भी उनके सपनों के लिए लाखों छोड़ जाए?' उन्होंने एक स्टेप-अप एसआईपी स्ट्रैटेजी का सुझाव दिया है। यह स्ट्रैटेजी महंगे एजुकेशन लोन की जगह ले सकती है। यह लंबी अवधि की वित्तीय योजना है।

### कैसे काम करती है स्कीम?

यह योजना इस तरह काम करती है। जब आपका बच्चा पैदा हो तब हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू करें। अगले 10 सालों तक हर साल एसआईपी की राशि को 10% बढ़ाएं। 10 साल पूरे होने के बाद एसआईपी में पैसा डालना बंद कर दें। जब बच्चा 10 साल का हो जाए तब से 22 साल का होने तक हर महीने 25,000 रुपये निकालें। यह पैसा बच्चे की फीस के लिए होगा। इस योजना में 12% सीएजीआर (चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर) मानी गई है।

### क्या है पूरा गणित?

निवेश के गणित के अनुसार, आप 10 साल में कुल 19.12 लाख रुपये का निवेश करेंगे। तब तक यह राशि बढ़कर 32.69 लाख रुपये हो जाएगी। अगले 12 सालों में आप एजुकेशन के लिए कुल 36 लाख रुपये निकालेंगे। इसके बावजूद आपके खाते में 51 लाख रुपये बचे रहेंगे। उन्होंने कहा, 'पैसे निकालते समय भी कंपाउंडिंग काम करती है।' इसका मतलब है कि बचा हुआ पैसा बढ़ता रहता है। इससे भुगतान के दौरान भी धन बढ़ता रहेगा।

### दंग कर देने वाले रिजल्ट

इस योजना की तुलना एजुकेशन लोन से करें। 36 लाख रुपये के एजुकेशन लोन पर 11% ब्याज दर से 10 साल के लिए ईएमआई लगभग 50,000 रुपये प्रति माह होगी। यह एसआईपी से निकाली गई राशि से दोगुना है। इसमें ब्याज का भारी बोझ भी होता है। कौशिक ने कहा कि यह रणनीति आपकी आय वृद्धि से मेल खाती है। उन्होंने बताया, '10 हजार रुपये महीने से शुरू करें और 10वें साल तक आप सालाना 2.8 लाख रुपये का निवेश कर रहे होंगे जो प्रमोशन और वेतन वृद्धि के अनुरूप है।' उनके कुछ सुझाव भी हैं। कम लागत वाले इंडेक्स फंड का उपयोग करें। आपात स्थितियों के लिए हमेशा कुछ लिक्विडिटी बनाए रखें। अपनी प्रगति की सालाना समीक्षा करते रहें। उन्होंने निष्कर्ष निकाला, '10 साल के लिए एक अनुशासित, स्टेप-अप एसआईपी एक दशक के ओवरटाइम से कहीं ज्यादा कर सकती है।' यह तनाव-मुक्त और स्मार्ट कंपाउंडिंग का तरीका है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- सीए ने निवेशकों को बताया क्रिप्टोकरेंसी से होने वाले नफे-नुकसान का गणित
- क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करते हैं तो इस पर लगने वाले टैक्स के बारे में भी जान लें

### 100 रुपये प्रॉफिट कमाने के बाद 100 रुपये गंवाने पर भी चुकाने होंगे 30 रुपये

# क्रिप्टो नहीं, टैक्स का मायाजाल पैसे गंवाए तो भी देना होगा कर

अगर आप बाजार में शॉर्ट टर्म निवेश करना चाहते हैं तो आपके कुछ स्कीम बाजार में मौजूद हैं। इनमें रिटर्न भी बढ़िया मिलता है इसे लिक्विड फंड के नाम से जाना जाता है। ऐसे निवेश में पैसा उन सिक्योरिटीज में निवेश करते हैं, जिनकी मैच्योरिटी 91 दिनों से अधिक नहीं होती है। निवेशकों का पैसा इसके जरिए मनी मार्केट, शॉर्ट टर्म कॉरपोरेट डिपॉजिट और ट्रेजरी में लगाया जाता है।

देश में कई सालों से लोग क्रिप्टोकरेंसी में निवेश कर रहे हैं। कई तो इससे मोटा मुनाफा भी कमा चुके हैं और कई अपनी जमापूंजी गंवा चुके हैं। लेकिन अब सरकार ने क्रिप्टोकरेंसी में निवेश के नियम कड़े कर दिए हैं। क्रिप्टोकरेंसी में होने वाली कमाई पर 30 फीसदी का टैक्स लगता है। खास बात यह है कि आपने क्रिप्टोकरेंसी में 100 रुपये का प्रोफिट कमाया और बाद में उसे इसी एसेट्स में गंवा दिया तो भी आपको 30 रुपये टैक्स देना होगा। पिछले कुछ सालों में क्रिप्टोकरेंसी में निवेश का चलन काफी तेजी से बढ़ा है। वहीं पिछले साल डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकी राष्ट्रपति का चुनाव जीता था। तब से क्रिप्टो में और तेजी देखने को मिली है। इसे देखते हुए अब काफी भारतीय बिटकॉइन, इथेरियम, बाइनेंस, डॉगकॉइन आदि क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करने लगे हैं। चूंकि क्रिप्टोकरेंसी पर किसी भी सरकार का केंद्रीय बैंक का कंट्रोल नहीं है, ऐसे में इसमें होने वाले प्रॉफिट पर भारत में टैक्स से जुड़े नियम काफी सख्त हैं। दरअसल, क्रिप्टोकरेंसी में टैक्स का नियम कुछ ऐसा है कि इसमें पैसे कमाने पर ही नहीं बल्कि पैसे गंवाने पर भी इनकम टैक्स चुकाना पड़ सकता है। फिर चाहे आपका पूरा पोर्टफोलियो घाटे में ही क्यों ना चल रहा हो। भारत के सख्त क्रिप्टो टैक्स नियमों के तहत, निवेशकों को हर रुपये के मुनाफे पर फ्लैट 30% टैक्स देना होता है, भले ही कुल मिलाकर नुकसान हुआ हो। एक्सपर्ट का कहना है कि यह सिस्टम दुनिया के सबसे कठोर नियमों में से एक है, जिससे भारतीय क्रिप्टो निवेशकों को राहत मिलने की गुंजाइश बहुत कम है। इस टैक्स सिस्टम को लेकर एक चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीए) ने अपनी राय रखी और क्रिप्टोकरेंसी निवेशकों को अगाह किया है कि इसमें सोच समझकर ही निवेश करें, वरना यह घाटे का सौदा हो सकता है।

### क्रिप्टो टैक्सेशन की बताई सच्चाई

एक सीए ने सोशल मीडिया पर क्रिप्टो टैक्सेशन की सच्चाई बताई है। उन्होंने पोस्ट के जरिए मैसेज दिया है कि भले ही आपने क्रिप्टो में 100 रुपये गंवाए हों, आपको 30 रुपये टैक्स के रूप में चुकाने पड़ सकते हैं। उन्होंने समझाया कि मान लीजिए कि आपने एक ही वित्तीय वर्ष में बिटकॉइन पर 100 रुपये का मुनाफा कमाया, लेकिन इथेरियम पर 200 रुपये का नुकसान उठाया। किसी भी दूसरे निवेश में आपको कुल 100 रुपये का नुकसान होता। लेकिन क्रिप्टो में ऐसा नहीं है। बिटकॉइन से हुई 100 रुपये की कमाई पर आपको 30% यानी 30 रुपये टैक्स के रूप में चुकाने होंगे। फिर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इथेरियम या किसी दूसरी क्रिप्टो से आपको कितना नुकसान हुआ है। ऐसे में आपको कुल 130 रुपये की चपत लगेगी।

### क्या है क्रिप्टो से जुड़े नियम

- आयकर अधिनियम की धारा 115बीबीएच के तहत क्रिप्टो एसेट्स के लिए कुछ खास और कड़े नियम हैं।
- नुकसान की भरपाई नहीं (आप एक क्रिप्टो नुकसान को दूसरे मुनाफे से नहीं काट सकते)।
- नुकसान आगे नहीं ले जा सकते (इसे समायोजित नहीं कर सकते)।
- अधिग्रहण की लागत को छोड़कर कोई कटौती नहीं।
- ट्रेडिंग फीस जैसे चार्ज भी नहीं घटाए जाते
- इथेरियम पर 200 रुपये के नुकसान को अनदेखा कर दिया जाएगा और बिटकॉइन पर हुए 100 रुपये के मुनाफे पर 30% यानी 30 रुपये टैक्स देना होगा।
- कुल मिलाकर 130 रुपये का नुकसान होगा। यहां तक कि ट्रेडिंग फीस, गैस चार्ज, माइनिंग की लागत, या एक्सचेंज कमीशन जैसी चीजें आपके टैक्सेबल मुनाफे से नहीं घटाई जा सकतीं।

### क्या है क्रिप्टोकरेंसी

क्रिप्टोकरेंसी एक डिजिटल या वर्चुअल मुद्रा है जो कंप्यूटर नेटवर्क पर सुरक्षित और विकेंद्रीकृत तरीके से काम करती है। यह पारंपरिक मुद्राओं की तरह नहीं है, जो सरकारों द्वारा नियंत्रित और जारी की जाती हैं।

### विशेषताएं

1. विकेंद्रीकृत : क्रिप्टोकरेंसी किसी एक केंद्रीय प्राधिकरण द्वारा नियंत्रित नहीं होती है।
2. डिजिटल : यह पूरी तरह से डिजिटल रूप में मौजूद होती है।
3. क्रिप्टोग्राफी : सुरक्षा के लिए क्रिप्टोग्राफिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है।
4. ब्लॉकचेन : अधिकांश क्रिप्टोकरेंसी ब्लॉकचेन तकनीक पर आधारित होती हैं।
5. सीमित आपूर्ति : कई क्रिप्टोकरेंसी की आपूर्ति सीमित होती है।

### प्रमुख क्रिप्टोकरेंसी

1. बिटकॉइन : पहली और सबसे प्रसिद्ध क्रिप्टोकरेंसी।
2. एथेरियम : स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट्स के लिए जानी जाती है।
3. रिपल : अंतर्राष्ट्रीय भुगतान के लिए उपयोग।
4. लाइटकॉइन : बिटकॉइन का एक वैकल्पिक।
5. कार्डानो : शोध-आधारित ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म।

### उपयोग

1. डिजिटल भुगतानः ऑनलाइन लेनदेन के लिए।
2. निवेशः कई लोग क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करते हैं।
3. विकेंद्रीकृत अनुप्रयोग : एथेरियम जैसे प्लेटफॉर्म पर।
4. सीमापार लेनदेनः पारंपरिक तरीकों की तुलना में तेज और सस्ता।

### जोखिम

1. अस्थिरताः कीमतें बहुत तेजी से बदल सकती हैं।
2. सुरक्षा जोखिमः हैकिंग और चोरी का खतरा।
3. नियामक अनिश्चितताः विभिन्न देशों में नियम अलग-अलग हैं।
4. घोटालेः फ्रॉड और स्कैम का खतरा।
5. तकनीकी जोखिमः तकनीकी समस्याएं आ सकती हैं।

# दिवाली बोनस का करें सही इस्तेमाल कर सकते हैं अपने लिए बड़ी बचत

म्यूचुअल फंड्स, रिटायरमेंट प्लान या कर्ज चुकाने में लगाएं, जरूरतों के लिए 30%, इच्छाओं के लिए- 30%, वेल्थ बनाने के लिए-40% प्रयोग करें

तोहफा | बिजनेस डेस्क

दिवाली को महज कुछ दिन ही शेष बचे हैं। ऐसे में हर साल दिवाली पर ज्यादातर कंपनियां अपने कर्मचारियों को बोनस देती हैं। यह बोनस हमारे लिए खुशियों का तोहफा भी होता है, साथ ही अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने का मौका भी। हालांकि अक्सर होता यह है कि जैसे ही बोनस हाथ में आता है, हम शॉपिंग, नई चीजें खरीदने और शौक पूरे करने में पैसा खर्च कर देते हैं। ऐसे में यह जानना जरूरी है कि इस पैसे का स्मार्ट उपयोग क्या हो सकता है। इसका आप कहां सही इस्तेमाल कर सकते हैं। कैसे अपनी वेल्थ बना सकते हैं या कर्ज उतार सकते हैं।

### स्मार्ट तरीके से बांटें : सही बैलेंस बनाएं

बोनस को खर्च करने का सबसे अच्छा तरीका ये है कि इसे दो हिस्सों में बांट लें-एक हिस्सा त्योहार मनाने के लिए और दूसरा भविष्य की जरूरतों के लिए। बाजार के जानकारों के अनुसार बोनस का 50% हिस्सा त्योहार और लाइफस्टाइल पर खर्च करें और बाकी 50% म्यूचुअल फंड्स, रिटायरमेंट या कर्ज चुकाने जैसे लॉन्ग-टर्म गोल्स के लिए रखें। अगर आपके ऊपर ज्यादा जिम्मेदारियां हैं, तो तीन हिस्सों में बांट सकते हैं। जैसेः-

■ जरूरतों के लिए- 30%■ इच्छाओं के लिए- 30%■ वेल्थ बनाने के लिए- 40%

### जिंदगी के स्टेज के हिसाब से बांटें।

इसे बांटने का हर किसी का तरीका अलग हो सकता है। 'अपने बोनस को अपनी जिंदगी के स्टेज के हिसाब से बांटें। अगर आपके ऊपर हाई-इंटरेस्ट कर्ज है, तो 60-70% बोनस उसको चुकाने में लगाएं।'

*"'बोनस को बांटने की प्रक्रिया में परिवार को जरूर शामिल करें, ताकि हर कोई मस्ती और अनुशासन के बीच बैलेंस समझे।' इस तरह समझदारी से खर्च और स्मार्ट निवेश के साथ आपका दिवाली बोनस न सिर्फ त्योहार को खास बनाएगा, बल्कि आपके भविष्य को भी बेहतर बनाने के काम आ सकता है।*

### हाई-इंटरेस्ट कर्ज चुकाएं

अपने बोनस का कुछ हिस्सा क्रेडिट कार्ड के बिल, पर्सनल लोन या किसी भी हाई-इंटरेस्ट कर्ज को चुकाने में लगाएं। इससे भविष्य में आपका पैसा बचेगा। 'सबसे पहले अपने कर्ज की लिस्ट बनाएं, सबसे ज्यादा इंटरेस्ट वाले कर्ज को पहले चुकाएं। यहां तक कि आंशिक पेमेंट भी लोन की अवधि और टोटल इंटरेस्ट को कम कर सकता है।' अगर आपके पास महंगा कर्ज है, तो नए निवेश से पहले इसे चुकाना प्रायोरिटी होनी चाहिए।

### निवेश की स्ट्रैटजी

निवेश के लिए ऑप्शन्स आपकी जरूरतों पर निर्भर करते हैं। '3 साल से कम की अवधि के लिए लिक्विड फंड्स या रिकरिंग डिपॉजिट्स में निवेश करें। मीडियम से लॉन्ग-टर्म के लिए डायवर्सिफाइड इक्विटी म्यूचुअल फंड्स या इंडेक्स फंड्स चुनें।' अपने पोर्टफोलियो में डायवर्सिफिकेशन के लिए सोवरेन गोल्ड बॉन्ड्स या गोल्ड ईटीएफ भी जोड़ सकते हैं। महत्वपूर्ण है कि रिटर्न और लिक्विडिटी में बैलेंस बनाएं, ताकि आपका शॉर्ट-टर्म पैसा रिस्क में न आए। दिवाली बोनस आपके फाइनेंशियल गोल्स को तेजी से पूरा करने का मौका है। 'बोनस या तो एक हफ्ते की शॉपिंग में खत्म हो सकता है या सालों तक आपके लिए काम कर सकता है। इसे फाइनेंशियल फिटनेस का बूस्टर समझें।'

### सेलिब्रेशन के लिए बजट बनाएं

त्योहार की खुशी फाइनेंशियल टेंशन में न बदल जाए इसके लिए सही बजट बनाना जरूरी है। 'पहले अंदाजा लगाएं कि त्योहार में कितना खर्च होगा-गिफ्ट्स, घूमने-फिरने, सजावट, ट्रैवल और धार्मिक रस्मों पर।' इस खर्च को अपने बोनस और रेगुलर इनकम के साथ मिलाकर देखें। इससे आपको एक फिक्स्ड बजट मिलेगा और आप बाकी पैसों को पहले ही निवेश में डालकर अपने गोल्स को प्रायोरिटी दे सकते हैं।

### स्मार्ट तरीके से सेलिब्रेट करें

त्योहारों में ओवरस्पेंडिंग का खतरा हमेशा रहता है। 'बोनस को 'एक्स्ट्रा' पैसा समझकर फूंक न दें।' क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन लेकर शॉपिंग करना तो बिल्कुल अवॉइड करें, क्योंकि इनके इंटरेस्ट रेट्स बहुत ज्यादा होते हैं और ये कर्ज के जाल में फंसा सकते हैं। बिना कर्ज के सेलिब्रेशन के लिए क्रिएटिव तरीके अपनाएं। 'पॉटलक गैदरिंग्स करें, दीया डेकोरेशन बनाएं या अर्ली-बर्ड ट्रैवल डील्स का फायदा उठाएं।'

## 'फंड ऑफ फंड्स' में करें निवेश, दोनों हाथों में रहेंगे लड्डू

बिजनेस डेस्क

सोना और चांदी की कीमत इस समय रॉकेट की रफ्तार से भाग रही है। वहीं, फेस्टिव सीजन के कारण इसकी कीमत में और तेजी आ सकती है। अगर आप धनतेरस पर सोना और चांदी दोनों में निवेश करना चाहते हैं तो 'कॉम्बो फंड ऑफ फंड्स' एक बेहतरीन ऑप्शन हो सकते हैं। दरअसल, इस समय म्यूचुअल फंड कंपनियां निवेशकों को दोनों धातुओं में आसानी से निवेश करने का मौका दे रही हैं। इसके लिए वे डुअल-एसेट पैसिव फंड्स (ऐसे फंड जो सोने और चांदी दोनों में निवेश करते हैं) लॉन्च कर रही हैं। पिछले दो साल में सोने की कीमत करीब दोगुनी हो गई है। वहीं, औद्योगिक मांग और सप्लाई में कमी के कारण चांदी भी तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में निवेशक महंगाई से बचने और अपने पोर्टफोलियो को मजबूत करने के लिए गोल्ड और सिल्वर फंड ऑफ फंड्स (एफओएफ) की ओर रुख कर रहे हैं।

### अलग-अलग निवेश की जरूरत नहीं

डुअल-एसेट पैसिव फंड्स में निवेश के बाद सोना और चांदी, दोनों में अलग-अलग निवेश करने की जरूरत नहीं पड़ती। यानी आप फिजिकल सोना-चांदी खरीदे या अलग-अलग ईटीएफ में निवेश किए बिना दोनों की तेजी का फायदा उठा सकते हैं। इस नई कैटेगरी में चार बड़े फंड्स सामने आए हैं। इनमें कोटक गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ, मिराए एसेट गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ, एडलवाइस गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ और मोतीलाल ओसवाल गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ शामिल हैं।

### 1. कोटक गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ

- यह फंड 20 अक्टूबर 2025 तक सब्सक्रिप्शन के लिए खुला है। निवेशक सिर्फ 100 से निवेश शुरू कर सकते हैं।
- इसका मकसद कोटक गोल्ड ईटीएफ और कोटक सिल्वर ईटीएफ में निवेश करके लंबी अवधि में अच्छा रिटर्न कमाना है।
- यह एफओएफ एक खास क्वांटिटेटिव मॉडल का इस्तेमाल करता है। यह मॉडल सोने और चांदी की कीमतों के उतार-चढ़ाव के आधार पर अपने आप तय करता है कि किस धातु में कितना पैसा लगाना है।

### 2. मिराए एसेट गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ

इस फंड में शुरुआत में 50:50 का आवंटन होता है, लेकिन सोने-चांदी के अनुपात (गोल्ड-सिल्वर रेश्यो) व महंगाई, ग्लोबल ब्याज दरें, डॉलर की मजबूती जैसे बड़े आर्थिक संकेतकों के आधार पर यह अनुपात बदलता रहता है। इस फंड का एक्सपेंस रेशियो 0.18% है और 7 अक्टूबर 2025 तक इसका एयूएम (एसेट्स अंडर मैनेजमेंट- फंड में कुल जमा राशि) 67 करोड़ रुपये था।

### 3. एडलवाइस गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ

यह फंड सितंबर 2022 में लॉन्च हुआ था। यह भारत का सबसे पुराना डुअल-मेटल फंड है और हाल के दिनों में धातुओं की तेजी से इसने काफी फायदा उठाया है। इसमें 500 रुपये से निवेश शुरू कर सकते हैं। यह फंड सोने और चांदी में लगभग बराबर हिस्सेदारी रखता है यानी 49.98% सोने में और 49.83% चांदी में। फंड ने पिछले एक साल में 57.9% का रिटर्न दिया है और पिछले तीन सालों में सालाना 31.97% का रिटर्न दिया है।

### 4. मोतीलाल ओसवाल गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ

यह फंड अक्टूबर 2022 में लॉन्च हुआ था और इसने पिछले दो सालों में एक मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड बनाया है। यह फंड 69.34% आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल गोल्ड ईटीएफ में और 30.17% निप्पॉन इंडिया सिल्वर ईटीएफ में निवेश करता है। इसका एयूएम 244.32 करोड़ रुपये है, एक्सपेंस रेशियो 0.15% है और कोई एग्जिट लोड नहीं है। फंड ने पिछले एक साल में 59.7% का रिटर्न दिया है। वहीं पिछले दो सालों में सालाना 18.1% का सीएजीआर व पिछले तीन सालों में सालाना 11.6% का रिटर्न दिया है।

# एफडी साइलेंट वेल्थ ट्रैप, सिर्फ इससे ही नहीं बन पाओगे अमीर दूसरे विकल्पों पर भी दें ध्यान

सुझाव | बिजनेस डेस्क

अगर आप फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) में निवेश को ही असली निवेश समझते हैं तो आप गलत हो सकते हैं। एक एक्सपर्ट ने एफडी में निवेश को 'साइलेंट वेल्थ ट्रैप' बताया है। यानी एक ऐसा जाल जिसमें आप अमीर बनने के लिए जाते हैं, लेकिन अंत में फंस जाते हैं। क्योंकि सिर्फ एफडी में निवेश करके अमीर नहीं बना जा सकता। एक्सपर्ट ने इसका कारण भी बताया है। जानकारों का कहना है कि बड़ा फंड बनाने के लिए सिर्फ एफडी में निवेश करना सही नहीं है। उन्होंने उन लोगों को भी चेतावनी दी है जो एफडी में निवेश को ही असली निवेश समझ लेते हैं। वह बताते हैं कि यह जाल तब बनता है जब लोग अपना ज्यादातर पैसा एफडी में रखते हैं। वे महंगाई के असर और पैसे बढ़ाने के मौकों को नजरअंदाज कर देते हैं। एफडी में आपका पैसा तो सुरक्षित रहता है, लेकिन आपको रिटर्न बेहद कम मिलता है। इसलिए सिर्फ एफडी के भरोसे नहीं रहें। निवेश के लिए एसआईपी जैसे विकल्प भी तलाशे।

### निवेश के लिए एसआईपी जैसे विकल्प भी तलाशें, तभी बढ़ा पाएंगे पैसा

#### यह मिलता है ब्याज

आज एफडी की सालाना दरें लगभग 6.3% से 7% हैं, जबकि महंगाई करीब 2.1% है। आपकी असली कमाई लगभग 4.2 से 4.9% प्रति वर्ष है।' अगर आप 10 लाख रुपये एफडी में रखते हैं, तो एक साल बाद उसकी असली खरीदने की ताकत सिर्फ 10.42 लाख रुपये ही रह जाती है। इसका मतलब है कि आपका पैसा असल में बहुत कम बढ़ता है।

#### लोगों को एफडी पर भरोसा क्यों

भारत के लगभग 70% परिवार अभी भी एफडी को ही अपनी बचत का मुख्य जरिया मानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोगों को इसमें पैसे की पूरी सुरक्षा का भरोसा मिलता है। साथ ही, उन्हें पैसे के लेन-देन की कम जानकारी होती है और वे बाजार के उतार-चढ़ाव से डरते हैं।

#### यह दी चेतावनी

उन्होंने चेतावनी दी कि सुरक्षा का यह भरोसा तभी तक सही है जब तक महंगाई कम रहती है। उन्होंने लिखा कि अगर महंगाई आपकी एफडी से मिलने वाले रिटर्न से ज्यादा हो जाती है तो आपकी असली दौलत कम होने लगती है। उन्होंने जोर देकर कहा कि वित्तीय सुरक्षा लापरवाही से नहीं, बल्कि निवेश को अलग-अलग जगह बांटने से मिलती है।

#### निवेश का तरीका बताया

एक संतुलित निवेश का तरीका सुझाया। इसमें फिक्स्ड डिपॉजिट के साथ शेयर बाजार (जिसने पहले 12 से 15% सीएजीआर का रिटर्न दिया है), डेट फंड (6.5 से 8%) और महंगाई से बचाने वाले निवेश जैसे सोना या आरईआईटीएस को शामिल करना चाहिए। उन्होंने सलाह दी कि अपने निवेश को एक ही जगह न रखकर अलग-अलग जगह बांटें।

#### ये हैं निवेश के विकल्प

1. **शेयर बाजार (इक्विटी)- शेयर :** कंपनियों के हिस्सेदारी वाले शेयर।
   - **म्यूचुअल फंड :** पेशेवर प्रबंधन वाले फंड जो विविध शेयरों में निवेश करते हैं।
   - **ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड):** शेयर बाजार में ट्रेड होने वाले फंड।
2. **फिक्स्ड इनकम निवेश- फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी):** बैंकों में निश्चित अवधि के लिए जमा।
   - **बॉन्ड:** कंपनियों या सरकार द्वारा जारी कर्ज साधन।
   - **डेब्ट म्यूचुअल फंड:** बॉन्ड और अन्य फिक्स्ड इनकम साधनों में निवेश।

#### ये हैं निवेश के विकल्प

3. **रियल एस्टेट- आवासीय संपत्ति :** घर या फ्लैट।
   - **वाणिज्यिक संपत्ति :** ऑफिस, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स।
   - **आरईआईटी (रियल एस्टेट इनवेस्टमेंट ट्रस्ट):** रियल एस्टेट में निवेश के लिए ट्रेडेबल यूनिट्स।
4. **सोना और कीमती धातुएं-भौतिक सोना :** सिक्के, बार।
   - **गोल्ड ईटीएफ :** सोने में निवेश के लिए एक्सचेंज ट्रेडेड फंड।
   - **सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड:** सरकार द्वारा जारी।
5. **म्यूचुअल फंड- इक्विटी फंड:** शेयर बाजार में निवेश।
   - **हाइब्रिड फंड:** इक्विटी और डेट का मिश्रण।
   - **डेब्ट फंड:** फिक्स्ड इनकम साधनों में निवेश।
6. पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड)- लंबी अवधि की बचत योजना जो कर लाभ देती है।
7. एनपीएस (नेशनल पेंशन सिस्टम)- रिटायरमेंट के लिए पेंशन योजना।
8. यूएलआईपी (यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान)- निवेश और बीमा का मिश्रण।
9. क्रिप्टोकरेंसी- डिजिटल मुद्राएं जैसे बिटकॉइन, एथेरियम (उच्च जोखिम)।
10. एफडी और आरडी (रिकरिंग डिपॉजिट)- बैंकों में निश्चित आय के विकल्प।

## खबर संक्षेप

### एंबुलेंस में तोड़फोड़ करने के मामले में चार गिरफ्तार

**नारनौल।** पैसों के लेन देन के मामले में आपसी रंजिश के चलते एम्बुलेंस तोड़ने के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना शहर पुलिस ने चार आरोपितों को गिरफ्तार किया है। जिनकी पहचान दीपक वासी भोड़ी अटेली, दीपक वासी खारीवाड़ा अटेली, मनीष वासी सागरपुर अटेली व रितीश वासी मांढण कोटपूतली बहरोड़ के रूप में हुई। पुलिस ने पूछताछ में आरोपितों से वारदात में प्रयोग की गई बुलेरो गाड़ी बरामद की है और एम्बुलेंस तोड़ने में प्रयोग किया गया फरसा बरामद किया है।

### भाजपा नेता अशोक यादव को मातृ शोक

**मंडी अटेली।** भाजपा नेता अशोक यादव की माता चंद्रकला पत्नी रूपचंद नंबरदार का शनिवार को हृदय गति रुकने से निधन हो गया। उनकी आयु लगभग 70 वर्ष थी। निधन की खबर मिलते ही गांव धनौंदा में शोक की लहर दौड़ गई। शनिवार को गांव धनौंदा के श्मशान घाट में उनका अंतिम संस्कार किया गया। जिसमें सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण, रिश्तेदार, राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र से जुड़े लोग शामिल हुए। भाजपा नेता अशोक यादव की माता चंद्रकला एक मिलनसार व सामाजिक प्रवृत्ति की महिला थी। जिन्हें गांव में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। वह अपने पीछे एक भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

## नई अनाज मंडी में बाजरा खरीद का लिया जायजा

# बाजरा एमएसपी पर खरीदने और खाद-बीज उपलब्ध कराने की मांग

- किसान सरकार की अनावश्यक जटिल शर्तों से चिंतित नजर आए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल। मंडी में पहुंचा संगठन का प्रतिनिधि मंडल। फोटो : हरिभूमि

ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के प्रतिनिधि मंडल ने शनिवार को जिला सचिव डॉ. व्रतपाल सिंह की अगुवाई में नई अनाज मंडी में बाजरा खरीद का जायजा लिया। इस दौरान किसानों से रूबरू हुए और उनसे मिलकर बाजरा खरीद में आ रही मुश्किलों की जानकारी ली। गांव हमीदपुर, खटोटी, मोहनपुर, धौलड़ा, रामबास, कुलताजपुर, पुरानी मण्डी सहित अनेक गांवों के किसान महावीर, मुकेश कुमार, रामबिलास, जयसिंह, महीपाल सिंह, भीमसेन ने बताया कि पिछले दिनों लगातार भारी बारिश से बाजरा सहित कपास व ग्वार की फसलों में भारी नुकसान हुआ है। किसानों ने कहा कि बाजरा खेतों में पैदा हुआ है और पिछले समय की भारी बारिश में बाजरा के उत्पादन के साथ उसका रंग भी प्रभावित होना स्वाभाविक है। ऐसे में सरकार को किसानों का बाजरा जैसी गुणवत्ता में है, वैसा ही स्वीकार कर न्यूनतम समर्थन मूल्य किसानों को दिया जाना ही न्यायसंगत होगा।

उन्होंने किा कहा कि पिछले दिनों बारिश से हुए नुकसान की किसान को अपनी लागत की भरपाई भी मुश्किल है। ऐसे में सरकार को किसानों की इस संकट की घड़ी में फसल खराबे का मुआवजा 50 हजार रुपये प्रति एकड़ व बाजरा की खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सरकारी एजेंसियों द्वारा करवा भुगतान सरकार अपने खजाने से करें। किसान सरकार की अनावश्यक जटिल शर्तों से भी चिंतित नजर आए। किसानों ने यह भी कहा कि रबी की फसल का यह उपयुक्त समय है, लेकिन उनको खाद की भारी किल्लत हो रही है। नई अनाज मंडी में किसानों के लिए खाना की भी मार्केट कमेटी की ओर से कोई व्यवस्था नहीं है।

किसान संगठन की ओर से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर बाजरा खरीद व रबी फसलों की बिजाई के लिए पर्याप्त खाद बीज उपलब्ध कराने की मांग को लेकर किसान संगठन एआईकेकेएमएस की ओर से नई अनाज मंडी के मार्केट कमेटी कार्यालय पर विरोध प्रदर्शन किया गया तथा मुख्यमंत्री व कृषि व किसान कल्याण मंत्री के नाम ज्ञापन सचिव मार्केट कमेटी के मार्फत मार्केट कमेटी सुपरवाइजर को सौंपा। जिससे किसानों को बाजरा की फसल औने पौने दामों में बेचनी पड़ी रही है।

### सरकारी खरीद न होने से किसान परेशान

**कनीना।** नई अनाज मंडी में बाजरे की आवक जारी है। किसान बाजरे से लदे वाहन लेकर मंडी में पहुंच रहे हैं, लेकिन सरकारी खरीद न होने से उन्हें नुकसान उठाकर प्राइवेट एजेंसी को औने-पौने भावों में बाजरा बेचना पड़ रहा है। जिससे किसान परेशान हैं। कनीना-अटेली मार्ग पर रेवाड़ी-बीकानेर ब्रॉडगेज रेलवे लाइन पर आरओबी का निर्माण कार्य किए जाने के चलते किसान ग्रामीण लिंक मार्गों से नई मंडी में जा रहे हैं। परेशान किसानों ने कनीना की पुरानी मंडी में भी बाजरे की खरीद शुरू करवाने की मांग की है। खरीद एजेंसी हैफेड के अधिकारी बदरंग बाजरे की सरकारी खरीद नहीं कर रहे हैं।

#### अभी तक एमएसपी पर नहीं खरीदा बाजरे का एक भी दाना

जिला सचिव डॉ. व्रतपाल सिंह ने कहा कि बाजरा इस इलाके की मुख्य फसल है। सरकार की बाजरा खरीद की घोषणा को 20 दिन हो गए हैं, लेकिन नारनौल सहित जिले की किसी भी अनाज मंडियों में सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य पर बाजरा का एक दाना भी नहीं खरीदा। इससे साफ जाहिर है कि सरकार की मंशा एमएसपी पर बाजरा खरीद की नहीं है। सरकार का दावा किसानों की फसलों का एक एक दाना न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद जाएगा, खोखला साबित हुआ है।

#### सरकार किसानों के साथ नहीं: संगठन

किसान नेता ने कहा कि न्यूनतम समर्थन मूल्य की बजाय भांवान्तर भरपाई योजना किसानों के साथ छलावा है तथा सरकार की भांवान्तर योजना मंडियों को खत्म करने की योजना है। सरकार की अनावश्यक शर्तों के कारण किसान भांवान्तर योजना से भी वंचित रह जाएंगे। बाजरे का एक भी दाना सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद नहीं करना साफ दर्शाता है कि सरकार किसानों के साथ नहीं है।

महेंद्रगढ़। सम्मलेन में उपस्थित अभिभावक। फोटो : हरिभूमि

## बीजेआरडी विद्यालय में सम्मेलन आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

गांव रिवासा स्थित बीजेआरडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल में अध्यापक-अभिभावक सम्मेलन आयोजित किया गया। इस दौरान विद्यालय डायरेक्टर राजपाल यादव और चेयरपर्सन शीला यादव व सभी स्टाफ उपस्थित रहे। सम्मेलन में विभिन्न शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक गतिविधियों पर चर्चा की गई, जिसमें विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति, परीक्षा परिणाम का विश्लेषण तथा भविष्य में सुधार के लिए योजना पर जोर दिया गया।

सम्मेलन के दौरान चेयरपर्सन शीला यादव ने विद्यालय के आगामी कार्यक्रम और शिक्षण योजना के बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने अभिभावकों को यह समझाया कि बच्चों के लिए शैक्षिक वातावरण के साथ-साथ एक अनुशासित जीवनशैली का महत्व भी कितना जरूरी है। उन्होंने कहा कि बच्चों के विकास के लिए अध्यापक-अभिभावक के बीच आपसी संवाद और समझ बहुत जरूरी है। डायरेक्टर राजपाल यादव ने अभिभावकों को उन्हें विद्यालय की ओर से हर संभव सहायता का भरोसा दिलाया। उन्होंने अभिभावकों से आग्रह किया कि वे बच्चों की शिक्षा में सक्रिय भागीदार बनें और शिक्षकों के साथ मिलकर उनके उज्जवल भविष्य के लिए सहयोग करें। सम्मेलन में सभी कक्षाओं के अध्यापकों ने अपनी कक्षाओं के लिए विशेष चर्चा की और अभिभावकों को बच्चों की दिनचर्या, होमवर्क तथा अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। स्कूल की ओर से बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिता और खेल-कूद के कार्यक्रम की योजना पर भी चर्चा की गई, जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके।

*श्रीकृष्णा स्कूल सिहमा में अध्यापक-अभिभावक मिलन समारोह आयोजित*

## शिक्षित समाज ही देश को प्रगति की ओर ले जा सकता है: डॉ. बीरसिंह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। अध्यापकों से विचार-विमर्श करते अभिभावक। फोटो : हरिभूमि

श्रीकृष्णा स्कूल सिहमा में अध्यापक-अभिभावक मिलन समारोह आयोजित किया गया। कोर्डिनेटर सुशीला यादव व स्मृति शर्मा ने बताया कि शनिवार को प्रातः नौ बजे से लेकर दोपहर दो बजे तक अध्यापक-अभिभावक मिलन समारोह हुआ, जिसमें कक्षा प्रथम से 12वीं तक के विद्यार्थी एवं उनके अभिभावक भाग लिया।

मुख्यातिथि चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव व अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. सुमेर सिंह ने की। उन्होंने बताया कि सत्र 2025-26 के सितंबर माह तक आयोजित टेस्ट व प्रथम टर्म के परीक्षा परिणाम सहित अन्य गतिविधियों से अवगत करवाया गया। चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव ने कहा कि शिक्षा से व्यक्ति आत्मनिर्भर बनता है। वह अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझता है। एक शिक्षित समाज ही देश को प्रगति की ओर ले जा सकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा जीवन का प्रकाश है। यह वह दीपक है जो अंधकार को दूर करता है और व्यक्ति को सही मार्ग दिखाता है। प्राचार्य डॉ. सुमेर सिंह ने कहा कि शिक्षा केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि एक अनिवार्य आवश्यकता है। यह जीवन की नींव है, जो व्यक्ति को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाती है। श्रीकृष्णा ग्रुप के विद्यार्थी हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाकर स्कूल के साथ-साथ क्षेत्र का नाम गौरवान्वित कर रहे हैं।

कनीना। बैठक में उपस्थित शिक्षक एवं अभिभावक। फोटो : हरिभूमि

### यूरो स्कूल में अभिभावक-अध्यापक संगोष्ठी आयोजित

*कनीना। यूरो स्कूल में शनिवार को शिक्षक-अभिभावक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें अभिभावकों ने विद्यार्थियों की अर्धवार्षिक परीक्षा परिणाम की रिपोर्ट प्राप्त की। विद्यालय के प्रधानाचार्य सुनील यादव व उप-प्राचार्या संजय यादव ने अभिभावकों का अभिनंदन करते हुए कहा कि शिक्षा विद्यार्थी को जीवन जीने के लिए नई दिशा प्रदान करती है। शिक्षा विद्यार्थी को न केवल शिक्षित बनाती है, बल्कि उसे संस्कृति व सभ्यता से परिचित कराकर उसे राष्ट्र निर्माण की ओर प्रेरित करती है। यह अध्यापक व अभिभावक दोनों के दिशा-निर्देशन तथा सहयोग से ही पूर्ण होती है। विद्यार्थी को शिक्षित करने में जितना योगदान गुरु का होता है, उतनी ही भूमिका माता-पिता की होती है। सभी विद्यार्थियों को अपने गुरु व अभिभावकों का सम्मान करना चाहिए।*

*पीआरटी, टीजीटी, पीजीटी और नॉन टीचिंग स्टाफ ने लिया भाग*

## श्रीकृष्ण स्कूल भुंगारका में हुई इन हाउस टीचर्स प्रशिक्षण कार्यशाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल। कार्यशाला में भाग लेते शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

सीबीएसई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस पंचकूला के तत्वावधान में श्रीकृष्ण सीनियर सेकेंडरी स्कूल भुंगारका में एक दिवसीय इन हाउस शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण तकनीकों और शिक्षा के महत्व से अवगत कराना था। सीबीएसई रिसोर्स ट्रैनर राकेश कुमार ने स्कूल के सभी स्टाफ को ट्रेनिंग दी। प्राचार्य वेदपाल व उप प्राचार्य संदीप खैरवाल ने मां सरस्वती की प्रतिमा के सामने दीप प्रज्वलित करके कार्यशाला का शुभारंभ किया। प्राइमरी हैड उमा यादव ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस कार्यशाला में स्कूल के पीआरटी, टीजीटी, पीजीटी और नॉन टीचिंग स्टाफ ने भाग लिया। स्कूल प्राचार्य वेदपाल यादव ने बताया कि कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण तकनीकों और शिक्षा के महत्व से अवगत कराना था। जिससे वे अपने कौशल में सुधार कर सकें और छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान कर सकें। उप प्राचार्य संदीप खैरवाल ने इस प्रशिक्षण के लाभों से अवगत करवाते हुए बताया कि इन हाउस प्रशिक्षण से शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण तकनीकों का ज्ञान प्राप्त होगा। जिससे वे छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षकों को प्रेरित कर सकेंगे। चेयरमैन एडवोकेट राजपाल यादव ने बताया कि कार्यशाला के माध्यम से शिक्षकों को अपने कौशल में सुधार करने व नवीनतम शिक्षण तकनीकों को अपनाने का अवसर मिला।

### जीएल महाविद्यालय में हुई मेहंदी प्रतियोगिता

**कनीना।** जीएल महिला महाविद्यालय में मेहंदी प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में कॉलेज की अनेक छात्राओं ने हिस्सा लिया और अपनी रचनात्मकता व कलात्मकता का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में छात्राओं ने पारंपरिक व आधुनिक डिजाइनों की खूबसूरत झलक पेश की। उनकी कलाकारी ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्राओं की प्रतिभा को मंच प्रदान करना व सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति उनका रूझान बढ़ाना था। कॉलेज प्राचार्या एवं अन्य स्टाफ सदस्यों ने छात्राओं के उत्साह की सराहना की और उन्हें आगे भी ऐसे कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

कनीना। प्रतियोगिता में भाग लेती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

## यदुवंशी के विद्यार्थियों ने किया धार्मिक भ्रमण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। भ्रमण करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

यदुवंशी डिग्री कॉलेज के विद्यार्थियों ने रामेश्वर धाम व बाबा बजरंगबली धाम रघुनाथपुरा की धार्मिक यात्रा की। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में धार्मिक संस्कृति व संस्कारों को प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है। इस यात्रा का शुरुआत संस्था अध्यक्ष व पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह, वाइस चेयरमैन एडवोकेट करण सिंह यादव, चेयरपर्सन संगीता यादव, फाउंडर डायरेक्टर राजेंद्र यादव, ग्रुप डायरेक्टर विजय सिंह यादव, डॉ. प्रदीप यादव के मार्गदर्शन में की गई।

विद्यार्थियों में इस अवसर को लेकर जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। यात्रा में कॉलेज के सभी विद्यार्थी सम्मिलित हुए और सभी ने हर हर महादेव व जय बजरंग बलि के जयकारे से वातावरण को गुंजायमान कर दि। संस्था अध्यक्ष व पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि आज के विद्यार्थी इस तकनीकी युग में भले ही आगे बढ़ रहे हो, परंतु उन्हें अपने संस्कार, परंपराओं से जुड़ा रहना अत्यंत आवश्यक है। ऐसी धार्मिक यात्राएं हमारे भीतर श्रद्धा, विनम्रता और कृतज्ञता की भावना को जागृत करती है। ग्रुप डॉ. विजय सिंह यादव ने कहा हमारे विद्यार्थी केवल शिक्षा में ही नहीं, बल्कि संस्कृति और धर्म के क्षेत्र में भी आगे बढ़े यह हमारा उद्देश्य है। आज की यात्रा सभी के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा लेकर आई। कॉलेज के सभी विद्यार्थियों ने मंदिर परिसर की स्वच्छता और व्यवस्था की सराहना की तथा विद्यार्थियों ने मंदिर में दीपक जलाकर अपनी मनोकामनाएं व्यक्त की।

मंडी अटेली। पीटीएम में भाग लेते अभिभावक। फोटो : हरिभूमि

### हिंदुस्तान पब्लिक स्कूल में पीटीएम आयोजित

**मंडी अटेली।** हिंदुस्तान पब्लिक स्कूल सलीमपुर में शनिवार को अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति पर चर्चा करना व अभिभावकों तथा शिक्षकों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना था। बैठक के दौरान अभिभावकों ने शिक्षकों से अपने बच्चों की पढ़ाई, व्यवहार तथा प्रदर्शन के बारे में विस्तार से चर्चा की। स्कूल के प्राचार्य अनूप कुमार ने सभी अभिभावकों का स्वागत किया और नियमित रूप से विद्यालय के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। वहीं निदेशक राकेश कुमार ने बताया कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत उपयोगी होती हैं। उन्होंने अभिभावकों से विद्यालय व शिक्षकों के साथ सहयोग बनाए रखने का आग्रह किया। विद्यालय परिवार ने बैठक में आए सभी अभिभावकों का धन्यवाद किया तथा विद्यार्थियों की प्रगति के लिए मिलकर कार्य करने का संकल्प लिया।

### मोहल्ला पुरानी सराय में किया माता की चौकी की आयोजन

# सज धज कर बैठी मां मंद-मंद मुस्काए...

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल। यजमान को मां की प्रतिमा भेंट करते हुए। फोटो : हरिभूमि

टाईगर क्लब परिवार के तत्वावधान में शुक्रवार रात को मोहल्ला पुरानी मंडी में स्थित कृष्ण कुमार यादव के निवास पर माता की चौकी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता टाईगर क्लब परिवार के प्रधान राकेश यादव, क्लब मुख्य संरक्षक डॉ. शिव कुमार यादव, वरिष्ठ उप प्रधान सुरेंद्र यादव ने संयुक्त रूप से की। माता रानी की चौकी के मुख्य यजमान अमित यादव सपरिवार रहे।

कार्यक्रम संयोजक प्रवीण यादव, सुनील शर्मा, विश्वास एडवोकेट, रवि खन्ना, श्रीचंद सैनी, नवीन वशिष्ठ, टीटू सोनी ने बताया कि माता की चौकी में सर्वप्रथम कार्यक्रम पुरोहित पंडित नारायण शास्त्री ने विधिवत पूजन किया। गणेश वंदना गायकार सोनू पागल व माता का आह्वान गायकर नवीन वशिष्ठ ने किया। मोहन सागर ने मैया तेरे दरबार की महिमा निराली है, सोनू पागल ने आ मां आ तुझे दिल ने पुकारा, विकास जांगिड़ ने प्यारो सजो अन्नपूर्णा माता को धाम नांगल सोड़ा नगरी में, बिगड़ी बनाने वाली ओ शेरों वाली मैया आ मां आ तुझे दिल से पुकारा, परमानंद वर्मा ने तूने मुझे बुलाया शेरा वालिये, मैया तेरे दरबार की महिमा निराली है, मंजू यादव ने मां वैष्णो का चोला है रंगला, मां शेरांवाली मैया जी मेरे घर आना बिगड़ी मेरी बना दे, नवीन वशिष्ठ ने लूट रहा लूट रहा मैया का खजाना लूट रहा रे, पंडित नारायण शास्त्री ने सज धज कर बैठी मां मंद मंद मुस्काए आदि भजनों की प्रस्तुति देकर भक्तजनों को भाव विभोर कर दिया। टाईगर क्लब परिवार के प्रधान राकेश यादव, सह कोषाध्यक्ष टीटू सोनी, श्रीचंद सैनी, प्रवीण यादव, सुनील शर्मा, परमानन्द वर्मा, नवीन वशिष्ठ, नारायण शास्त्री ने

#### ये रहे मौजू

इस मौके पर नरेंद्र बंसी, डॉ. शिव कुमार यादव, राकेश यादव, सुरेंद्र यादव, प्रवीण यादव, विश्वास यादव एडवोकेट, ललित सैनी, टीटू सोनी, सुनील शर्मा, रवि खन्ना, मनीष, निखिल, नीरज, हरीश, हैप्पी, पियूष आदि मौजूद थे।

## बिट्टू लांबा व सवितराज को किया सम्मानित

**नारनौल।** टाईगर क्लब परिवार की ओर से आयोजित सम्मान समारोह में समाजसेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले बजरंग दल व गोरक्षक दल के पदाधिकारी एवं सदस्य बिट्टू लांबा व टाईगर क्लब परिवार अटेली शाखा के अध्यक्ष सवितराज को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में टाईगर क्लब परिवार के अध्यक्ष राकेश यादव व प्रवीण यादव, जीतू रहीश मौजूद रहे। जीतू रहीश ने बिट्टू लांबा व प्रधान राकेश यादव ने सवितराज को माता रानी का पटका व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। इस मौके पर राकेश यादव व जीतू रहीश ने कहा कि बिट्टू लांबा व सवितराज की टीम रक्तदान, पर्यावरण संरक्षण व जनसेवा कार्यों में अग्रणी हैं।

नारनौल। बिट्टू लांबा व सवितराज को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

### आरआरसीएम स्कूल में दीवाली मेला आज

**कनीना।** आरआरसीएम स्कूल में आज दीवाली मेला आयोजित किया जाएगा। मेले में छात्र, अभिभावक और स्थानीय समुदाय के लोग भाग लेंगे। इस मेले में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद, खानपान के स्टॉल्स और क्राफ्ट वर्कशॉप्स का आयोजन किया जाएगा। छात्रों को इस अवसर पर अपनी कला और प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा और मेले में आने वाले लोग विभिन्न आकर्षण का लुत्फ उठा सकेंगे। आरआरसीएम स्कूल चेयरमैन रोशन लाल यादव ने बताया कि यह मेला छात्रों और समाज को एकजुट करने का एक बेहतरीन अवसर है और इसका मुख्य उद्देश्य दीवाली के त्योहारी माहौल को और भी खास बनाना है।

**सार्वजनिक सूचना**

मैं रोहितास पुत्र चेतराम सैनी वासी मौहल्ला सुभाष नगर नारनौल तहसील नारनौल जिला महेंद्रगढ हरियाणा बयान करता हूं कि मेरा लडका विकास आवारा किस्म का है और आए दिन घर में लडाई–झगडा करता रहता है। इसलिए मै उसको अपनी चल–अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं। भविष्य में उससे लेनदेन करने वाला स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरी व मेरे बाकि परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

## खबर संक्षेप

### वोट चोर गद्दी छोड़ प्रदर्शन नांगल चौधरी में आज

**महेंद्रगढ़।** लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी के राष्ट्रव्यापी अभियान वोट चोर गद्दी छोड़ हस्ताक्षर अभियान एवं प्रदर्शन 12 अक्टूबर को प्रातः 10 बजे नांगल चौधरी विधानसभा के गुर्जर धर्मशाला में आयोजित किया जाएगा, जिसमें मुख्य रूप से नांगल चौधरी की मौजूदा विधायक मंजू चौधरी शामिल होंगी। इसके अलावा कांग्रेस के सभी स्थानीय नेता और सभी प्रकोष्ठों के पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल रहेंगे। यह बात जिला महेंद्रगढ़ कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सत्यवीर झुकिया ने बताया कि पूरे देश में चुनाव आयोग को जागृत करने के लिए उनकी आत्मा जगाने के लिए राहुल गांधी ने यह राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू कर रखा है।

### यदुवंशी शिक्षा निकेतन में पीटीएम आयोजित

**नारनौल।** यदुवंशी शिक्षा निकेतन में अभिभावक शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 1500 अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर सभी शिक्षकों ने अभिभावकों से मिलकर विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, अनुशासन, व्यवहार व समग्र विकास पर सार्थक चर्चा की। बैठक का उद्देश्य विद्यालय और अभिभावकों के बीच सहयोग को और मजबूत बनाना था, ताकि प्रत्येक विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके। बैठक का सफल आयोजन प्राचार्य नरेश कुमार, निदेशिका सुरेश यादव व चेयरमैन राव बहादुर सिंह के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

### ग्रामीणों ने भबुल का किया स्वागत

**कनीना।** गांव खेड़ी तलवाना में सॉन्ग सम्राट चंद्रलाल बादी के शिष्य भबुल का ग्रामीणों ने पगड़ी पहनकर जोरदार स्वागत किया। वे लंबे समय से मुम्बई में सपरिवार रह रहे हैं। सॉन्ग विद्या में अपने जमाने के प्रसिद्ध कलाकार रहे भबुल पिछले 50 वर्ष से नवीमुंबई में रहकर संगीत सेवा दे रहे थे। चंद्रलाल बादी के सांग में उन्होंने महत्वपूर्ण रोल अदा किए थे। उन्होंने 1960 से 1975 तक चंद्र लाल सांगी की पार्टी में लगभग 15 साल काम किया। मुंबई पलायन करने के लगभग 50 वर्ष के बाद अपने गुरु भाई वेदप्रकाश भारती से मुलाकात कर पुरानी यादें ताजा की।

# भेडंटी के ग्रामीणों में सामाजिक कुरीतियों को मिटाने पर बनी सहमति

### युवाओं में शिक्षा और संस्कारों की प्रतिस्पर्धा विकसित करेगी कमेटी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नांगल चौधरी

गुर्जर समाज की महापंचायत के आह्वान पर भेडंटी में गांव की 36 बिरादरी की पंचायत आयोजित हुई। जिसमें सामाजिक कुरीतियों को मिटाने व युवाओं में शिक्षा तथा संस्कार विकसित करने के लिए कमेटी गठित की गई। नशाखोरी पर अंकुश लगाने के लिए मोहल्ले वाइज सेमिनार लगाए जाएंगे। जिसमें नशे से उत्पन्न बीमारियों से अवगत कराया जाएगा। अखिल भारतीय युवा गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुंदर चौधरी ने बताया कि समाज में मृत्युभोज, दशोटन व अन्य खुशी समारोह में शराब सेवन तथा अन्य अनावश्यक खर्चों की परंपरा बनी हुई है। जिससे संबंधित परिवार पर आर्थिक कर्जा बढ़ता है। कड़ी मेहनत करने के बावजूद यह कर्जा नहीं उतर पाता।

**खास बातें**

- मृत्युभोज दशोटन व सामाजिक समारोहों में शराब वितरण पर लगाई रोक
- गांव में हर सप्ताह सेमिनार लगाकर भारतीय संस्कृति का करेंगे प्रचार

### सामाजिक कुरीतियों को मिटाने व युवाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना अनिवार्य

**नवजात बच्चे के जन्म पर दशोटन भी अनावश्यक खर्चा**

उन्होंने कहा कि कुछ लोग सामाजिक रुतबा बढ़ाने के मकसद से मृत्यु भोज का आयोजन करते हैं। जबकि भारतीय संस्कृति में परिजन की मृत्यु होना दुखद घटना होती है। इस अवसर पर लोगों को भोज कराना किसी भी सूरत में उचित नहीं होता। नवजात बच्चे के जन्म पर दशोटन भी अनावश्यक खर्चा होता है। जिसका खामियाजा पूरे परिवार को कई साल तक भुगतना पड़ता है। कुआं पूजन समारोहों में भी वैदिक परंपराओं की पालना नहीं होती तथा शराब परोसने और पीने की होड़ बढ़ने लगी है। जिससे सामाजिक एकता प्रभावित होने के साथ युवाओं में अनुशासन हीनता बढ़ गई, क्योंकि अनावश्यक खर्चों की अधिकता होने से अधिकांश लोग बच्चों की फीस भी समय पर अदायगी नहीं कर पाते। बाजार की देनदारी होने के कारण मानसिक तनाव व सामाजिक तोहीन का सामना करना पड़ता है। समाधान के लिए सामाजिक कुरीतियों को मिटाने व युवाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना अनिवार्य है। इसके बाद पंचायत में शामिल ग्रामीणों ने विद्यासागर जांगड़ा से संपर्क किया। जिसके घर में शिशु के जन्मोत्सव पर छठी रात का कार्यक्रम निर्धारित था। ग्रामीणों के आग्रह पर उन्होंने छठी रात का प्रोग्राम निरस्त कर दिया तथा पंचायत को दशोटन नहीं करने का आश्वासन दिया है। इस मौके पर सरपंच इंद्राज गांधी, सतीश बॉस, पूर्व सरपंच हरिराम, जगमाल रिटायर्ड थानेदार, बुधराम जिंदड़ आदि मौजूद रहे।

नांगल चौधरी। सामाजिक कुरीतियां मिटाने के लिए विचार विमर्श करते ग्रामीण।

### युवाओं की शिक्षा व संस्कारों पर नजर रखेगी कमेटी

समाजसेवी सुंदर चौधरी ने बताया कि समृद्ध समाज व विकसित राष्ट्र का आधार युवा होते हैं। जिनकी शिक्षा व संस्कारों पर विशेष नजर रखने की जरूरत है, क्योंकि आयु के प्रभाव से अधिकांश युवा गलत संगत के फंसने के अलावा नशा करने लगते हैं। बचाव के लिए प्रबुद्धजनों की एक कमेटी बनाने का निर्णय लिया है, जोकि प्रत्येक सप्ताह युवा सम्मेलन आयोजित करके भारतीय संस्कृति की उपयोगिता से अवगत कराएगी।

### महर्षि वाल्मीकि सभा में विभिन्न संगठनों की हुई बैठक

# आईपीएस वाई पूरन कुमार की मौत पर संगठनों ने जताया रोष

**पुलिस व प्रशासन के दोषी उच्चाधिकारियों को निलंबित कर उन्हें कड़ी सजा दी जाए**

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

आईपीएस वाई पूरन कुमार की संदिग्धावस्था अवस्था में हुई आत्महत्या के मामले में विभिन्न संगठनों की रोष बैठक महर्षि वाल्मीकि सभा में सर्व अनुसूचित जाति संघर्ष समिति के प्रधान चन्दन सिंह जालवान की अध्यक्षता में हुई। जिसमें इस दर्दनाक व संगीन घटना पर भारी रोष प्रकट करते हुए जमकर नारेबाजी की गई और दो मिनट का मौन भी रखा गया। तत्पश्चात विभिन्न संगठनों ने संयुक्त हस्ताक्षर युक्त पत्र राष्ट्रपति, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, प्रधानमंत्री व हरियाणा के मुख्यमंत्री को भेज कर मांग की कि इस संगीत मामले में हाईकोर्ट के सिटिंग जज की देखरेख में निष्पक्ष जांच करवाकर हरियाणा पुलिस व प्रशासन के दोषी उच्चाधिकारियों को निलंबित कर उन्हें कड़ी सजा दी जाए, ताकि आरक्षित वर्ग के अधिकारियों व कर्मियों को सरकार द्वारा भय मुक्त माहौल मुहैया करवाया जा सके।

नारनौल। बैठक करते विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी। फोटो: हरिभूमि

**चण्डीगढ़ पुलिस को दी शिकायत**

बैठक का संचालन करते हुए समिति के महासचिव एवं कबीर सामाजिक उत्थान संस्था दिल्ली के वाइस चेयरमैन बिरदी चंद गोठवाल ने बताया कि मृतक अधिकारी की आईएएस पत्नी ने इस मामले को लेकर चण्डीगढ़ पुलिस को अपनी शिकायत दी। जिसमें उन्होंने हरियाणा के वर्तमान डीजीपी शत्रुजीत कपूर व रोहतक के एसपी नरेन्द्र बिजारणिया सहित कई अन्य आईएएस व आईपीएस अधिकारियों को अपने पति की मौत के लिए उत्तरदायी ठहराया है तथा एक सुसाईड नोट भी मीडिया में चल रहा है। जिसमें वाई पूर्ण कुमार ने उल्लेख किया है कि उन्हें जाति के आधार पर प्रताड़ित करने, अपने रैंक से नीचे पदों पर लगाने, एरियर रोकने, लो स्टैंडर्ड व्हीकल देने और डीजीपी ऑफिस में बैठे अन्य अधिकारियों द्वारा साजिश के तहत झूठी शिकायत करवाकर फंसाना और मीडिया में बदनाम करने जैसे कई गम्भीर आरोप लगाए हुए हैं। समिति के प्रधान चन्दन सिंह जालवान, आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति के उपाध्यक्ष पूर्व तहसीलदार लालाराम नाहर, परिवर्तनकारी साहित्य मंच के प्रधान पूर्व प्राचार्य डॉ. शिवताज सिंह, महर्षि वाल्मीकि सभा के प्रधान जोगेंद्र जैदिया, धानक समाज से पूर्व डीजीएम महेंद्र खन्ना, कोली सभा के तोताराम, हरियाणा प्रदेश चमार महासभा के जिलाध्यक्ष अनिल फाण्डन, डॉ. अंबेडकर जन जाग्रति मंच के जसवंत भाटी, श्रेष्ठ फाउंडेशन हरियाणा के सुशील शीलू, भारतीय बौद्ध महासभा के सुरेंद्र अंबेडकर, खटीक सभा के पतराम खिंची, अखिल भारतीय सफाई कर्मचारी संघ के दयाराम, एडवोकेट विनोद कुमार व विभिन्न संगठनों ने रोष प्रकट करते हुए कहा कि यह दुख का विषय है कि हरियाणा में आरक्षित वर्ग से आने वाले किसी भी सांसद व विधायक ने इस संगीन मामले में न्याय दिलाने के लिए आवाज नहीं उठाई।

**दोषी अधिकारियों की गिरफ्तारी व निलंबन की मांग**

**महेंद्रगढ़।** वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी वाई पूरन कुमार की आत्महत्या मामले में दोषी अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर विभिन्न सामाजिक संगठन के सदस्यों ने उपायुक्त के माध्यम से राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपकर अधिकारियों की तत्काल गिरफ्तारी व निलंबन की मांग की। उन्होंने ज्ञापन के माध्यम से बताया कि सात अक्टूबर को वाई पूरन कुमार की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई थी। मृतक अधिकारी की पत्नी ने चंडीगढ़ पुलिस को दी अपनी शिकायत में डीजीपी शत्रुजीत कपूर व रोहतक के एसपी सहित कई अन्य अधिकारियों को अपने पति की मौत के लिए उत्तरदायी ठहराया



# जेएनवी के छात्रों ने किया कनीना थाने का दौरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कनीना



कनीना। विद्यार्थियों को महिला सुरक्षा, साइबर सुरक्षा व यातायात नियमों की जानकारी देते पुलिसकर्मी। फोटो: हरिभूमि

जवाहर नवोदय विद्यालय करीरा के विद्यार्थियों ने शनिवार को बैगलेस-डे के अंतर्गत सिटी व शहर थाना का शैक्षणिक भ्रमण कर पुलिस की कार्यप्रणाली को समझा। वहीं बाल विवाह, साइबर क्राइम, महिला सुरक्षा, घरेलू हिंसा तथा यातायात नियमों की जानकारी हासिल की। सिटी थाना इंचार्ज निरीक्षक पवन हुड्डा व सदर थाना इंचार्ज सजन सिंह वशिष्ठ ने कहा कि पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ के दिशा-निर्देशन में स्कूली विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए समय-समय पर शिविर आयोजित किए जा रहे हैं।

डीएसपी दिनेश कुमार ने कहा कि पुलिस कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाती है।

सिटी थाना पहुंचे करीब 70 छात्र-छात्राओं ने पुलिस की कार्यप्रणाली को देखते हुए एफआईआर दर्ज करने के प्रोसेस से लेकर सीसीटीएनएस व केस के चालान तक की प्रक्रिया समझी। एएसआई स्नेहलता, एएसआई राकेश कुमार, सिपाही अमित कुमार ने विद्यार्थियों को साइबर क्राईम व यातायात नियमों के पालन की जानकारी दी। एएसआई स्नेहलता ने छात्राओं से कहा कि महिला अपराध को लेकर 112 नंबर डायल कर तुरंत पुलिस सहायता ली जा सकती है।

**ये रहे मौजूद**

इस मौके जेएनवी के शिक्षक देवीलाल, उषारानी, सिपाही ज्योति, ललिता, अमित कुमार, साहिल, भावना आदि उपस्थित थे।

### दीपावली पर्व पर मिट्टी के दीयों से करें जगमग

**मंडी अटेली।** राष्ट्रीय प्रजापति महासभा की राष्ट्रीय सचिव एवं जिला प्रधान विजय सिंह ने बताया कि दीपों का त्योहार दीपावली आने वाला है। इस मौके पर हमें अपने देश की मिट्टी से बने हुए दीपक के माध्यम से अपने गली मोहल्ले में आस पड़ोस को प्रकाशमय करना है। हमें अबकी बार बिजली वाली बनावटी रोशनी, फैंसी लाइट वगैरा का प्रयोग नहीं करना है। इससे न केवल आर्थिक रूप से खर्च बढ़ता है तथा वायु प्रदूषण होता है। इसके विपरीत मिट्टी से बने हुए दीपक को हम दीपावली के मौके पर उपयोग करने के बाद दोबारा भी अपने घर में उपयोग कर सकते हैं।

नारनौल। श्रीमद्भागवत कथा सुनाते आचार्य हेमराज भारद्वाज। फोटो: हरिभूमि

### श्रद्धा व विश्वास सफलता की जननी: आचार्य

**नारनौल।** धनौन्दा गांव में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के छठे दिन व्यासपीठ पर विराजमान आचार्य हेमराज भारद्वाज ने देवी भगवती के क्षमा, दया, दान, करूणा, श्रद्धा, विश्वास आदि गुणों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि श्रद्धा और विश्वास सफलता की जननी है। देवी मां के इन गुणों को धारण करने से जन्म जन्मांतर का बेड़ा पार हो जाता है। कथा में सती विवाह तथा राम सीता स्वयंवर की मनमोहक झांकियों ने श्रद्धालुओं को भक्तिरस से सरोबार कर दिया। इस दौरान प्रमुख समाजसेवी अतरलाल एडवोकेट ने कथा में पहुंचकर आचार्य हेमराज भारद्वाज को साफा पहनाकर व प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया। अतरलाल ने कहा कि कथाओं से भक्तों व श्रद्धालुओं को प्रेरणा मिलती है। इन कथाओं से आदमी बुरी आदतों को छोड़कर सदमार्ग की तरफ बढ़ता है। उन्होंने कथा करवाने के लिए बालाजी मंदिर कमेटी के श्रद्धालुओं का धन्यवाद किया।

# यदुवंशी शिक्षा निकेतन सतनाली में मिलन समारोह आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सतनाली मंडी

यदुवंशी शिक्षा निकेतन सतनाली में शनिवार को अभिभावक शिक्षक मिलन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें अभिभावकों के साथ उनके बच्चों का अर्धवार्षिक परिणाम सांझा किया गया। यह आयोजन विद्यालय की उस सोच का परिणाम था, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए स्कूल और परिवार के समन्वय को अत्यंत आवश्यक मानती है। इस विशेष अवसर पर छात्रों के माता पिता और अभिभावक विद्यालय पहुंचे और उन्होंने अपने बच्चों की शैक्षणिक व मानसिक प्रगति पर शिक्षकों से विस्तृत चर्चा की।

यदुवंशी ग्रुप के चेयरमैन राव बहादुर सिंह ने अभिभावकों को उनके बच्चों के परीक्षा परिणाम के लिए बधाई दी और उनके उज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम की शुरुआत विद्यालय के प्रधानाचार्य जितेन्द्र कुमार के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने अपने प्रेरणादायक संबोधन में अभिभावकों का आभार प्रकट किया और कहा बच्चों के जीवन में माता पिता और शिक्षक दोनों की भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण है। जब दोनों मिलकर कार्य करते हैं, तभी बच्चों का विकास संतुलित और सशक्त होता है। उन्होंने कहा कि भविष्य में इस तरह के आयोजन लगातार किए जाएंगे, ताकि प्रत्येक छात्र के उज्वल भविष्य की दिशा में सार्थक प्रयास हो सके। यह अभिभावक शिक्षक मिलन समारोह विद्यालय और अभिभावकों के बीच एक मजबूत तथा सकारात्मक संवाद स्थापित करने की दिशा में एक सफल कदम रहा।

सतनाली मंडी। पीटीएम में पहुंचे अभिभावकों को स्वागत करते हुए। फोटो: हरिभूमि

# कॉलेज में मनाया अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

राजकीय महाविद्यालय में महिला अध्ययन एवं विकास प्रकोष्ठ के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी एवं महाविद्यालय प्राचार्या प्रोफेसर डॉ. पूर्ण प्रभा ने किया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों और स्टाफ को बेटियों के अधिकार उनके सशक्तिकरण और समाज में उनके महत्व के प्रति जागरूक करना था। इस अवसर पर शिक्षा, समान अवसर और लैंगिक समानता के महत्व को रेखांकित किया गया और बेटियों के उज्वल भविष्य तथा सुरक्षित समाज की दिशा में एक प्रेरक संदेश दिया गया।

प्राचार्या प्रोफेसर डॉ. पूर्ण प्रभा ने विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के महत्व और उद्देश्य के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि परिवार का सम्मान और माता-पिता का अभिमान बेटियों की शिक्षा और विकास में निहित है। उन्होंने कहा कि बेटियां देश की सशक्त पहचान और आधार हैं। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि बेटियों की शिक्षा, पोषण और लैंगिक समानता के लिए संकल्प लें और सुरक्षित समाज तथा बेहतर भविष्य के निर्माण में योगदान दें। महिला अध्ययन एवं विकास प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. पविता यादव ने अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के ऐतिहासिक और वैश्विक महत्व पर प्रकाश डाला। यह दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित अंतरराष्ट्रीय दिवस है और इसे प्रतिवर्ष 11 अक्टूबर को मनाया जाता है।

महेंद्रगढ़। कार्यक्रम में उपस्थित छात्राएं व स्टाफ सदस्य। फोटो: हरिभूमि

**ये रहे मौजूद**

कार्यक्रम में महाविद्यालय उप-प्राचार्य प्रोफेसर विजय यादव, प्रोफेसर डॉ. कैप्टन शमशेर सिंह, प्रोफेसर जितेंद्र कुमार वशिष्ठ, डॉ. बलजीत सिंह, डॉ. सोमवीर, डॉ. रेनू यादव, डॉ. मुकेश यादव, डॉ. जितेंद्र सिंह, प्रोफेसर हीरा सिंह, डॉ. मुकेश कुमारी सहित महाविद्यालय के अन्य स्टाफ सदस्य और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# प्रधानमंत्री धन-धान्य योजना का सीधा प्रसारण

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रधानमंत्री धन-धान्य योजना एवं दलहन आत्मनिर्भरता मिशन का शुभारंभ किया गया। आयोजित राष्ट्रीय कार्यक्रम का सीधा प्रसारण हरियाणा पशु विज्ञान केन्द्र रिवासा में भी किसानों को दिखाया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र के सैकड़ों प्रगतिशील किसान और पशुपालक ने भाग लिया। किसानों ने प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तुत योजना और कृषि-आत्मनिर्भरता से संबंधित विचारों को गहनता से सुना और सराहा। कार्यक्रम का संचालन हरियाणा पशु विज्ञान केन्द्र के डेयरी विस्तार विशेषज्ञ डॉ. योगेन्द्र यादव द्वारा किया गया। यह आयोजन लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय हिसार कुलपति, प्रो. डॉ. विनोद कुमार वर्मा के निर्देशानुसार एवं निदेशक विस्तार शिक्षा डॉ. विरेंद्र पंवार के देखरेख में संपन्न हुआ। लाइव प्रसारण के उपरांत डॉ. योगेन्द्र यादव ने किसानों के साथ खुला संवाद सत्र आयोजित किया, जिसमें किसानों ने पशुपालन एवं कृषि में नई सरकारी योजना के क्रियान्वयन से जुड़ी अपनी शंकाएं व सुझाव साझा किए एवं किसानों को इन योजनाओं से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के उपाय बताए। प्रधानमंत्री की ये पहल किसानों की आय में वृद्धि, दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता और कृषि क्षेत्र में सतत विकास की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध होंगी।

महेंद्रगढ़। किसानों को संबोधित करते डॉ. योगेंद्र यादव। फोटो: हरिभूमि

### सरकार की नीतियों और योजनाओं की सराहना

किसानों ने भी सरकार की नीतियों और योजनाओं की सराहना की तथा इस तरह के कार्यक्रम को ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयोगी बताया। अंत में डॉ. योगेन्द्र यादव ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि हरियाणा पशु विज्ञान केन्द्र रिवासा किसानों के कल्याण और तकनीकी सशक्तिकरण के लिए सदैव सक्रिय रहेगा और भविष्य में भी ऐसे जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन करता रहेगा।

### राजकीय आईटीआई में रोजगार मेला कल

**महेंद्रगढ़।** आईटीआई के प्रधानाचार्य महाबीर सिंह ने बताया कि निदेशालय कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग हरियाणा के निर्देशानुसार प्रधानमंत्री राष्ट्रीय अपरेंटिसशिप कार्यक्रम के तहत 13 अक्टूबर को प्रातः 9:30 बजे जिले की सभी आईटीआई के पिछले पांच साल के पास शुदा छात्र–छात्राओं को अप्रेंटिस एवं ट्रेनीज सिलेक्शन के लिए रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। इस मेले में मानेसर, गुरुग्राम, नोएडा, बहादुरगढ़, धारुहेड़ा, बावल आदि एनसीआर क्षेत्र की ऑटोमोबाइल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रीकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर की विभिन्न कंपनियां जैसे न्यू हॉलैंड ट्रैक्टर्स, सोना कोम्स्टार, निप्पोन इलेक्ट्रिकल्स, मिंडा ग्रुप, श्रीराम पिस्टन आदि विभिन्न प्रमुख कम्पनियां भाग लेंगी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डेंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

### संगठन चलाएगा सदस्यता बढ़ाने के लिए अभियान, बैठक में लिया निर्णय

# रिटायर्ड कर्मचारी संगठन ने की नई शिक्षा नीति रद्द करने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

रिटायर्ड कर्मचारी संघ हरियाणा की जिला की इकाई बैठक यादव धर्मशाला में जिला प्रधान घनश्याम शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसमें प्रदेश सचिव धर्मपाल शर्मा व पूर्व राज्य उपप्रधान जगलाल निनानिया विशेष रूप से उपस्थित रहे।

बैठक का संचालन जिला सचिव रोशनलाल ने किया। बैठक को सम्बोधित करते हुए प्रधान घनश्याम शर्मा ने कहा कि सार्वजनिक उपकरणों का निजीकरण कॉरपोरेटाइजेशन बंद हो, सरकारी विभागों को सिकोड़ना बंद किया जाए, आठवां केंद्रीय वेतन आयोग गठित किया जाए, हर पांच वर्ष में वेतन संशोधित अनिवार्य किया जाए, लंबित महंगाई भत्ता दिया जाए व जब्त की गई डीए की सभी बकाया किस्ते जारी की जाए, नई शिक्षा नीति को रद्द किया जाए, संविधान में निहित धर्मनिरपेक्षता की रक्षा की जाए, सांप्रदायिकता के हर रूप से संघर्ष किया जाए।

नारनौल। बैठक करते रिटायर्ड कर्मचारी। फोटो: हरिभूमि

**केंद्र व राज्य वित्तीय संबंधों को पुनः परिभाषित किया जाए**

*उन्होंने मांग की कि केंद्र व राज्य वित्तीय संबंधों को पुनः परिभाषित किया जाए, सहकारी संघवाद की रक्षा की जाए, रिटायर्ड कर्मचारियों को आठवें वेतन आयोग का लाभ दिया जाए, कोरोना कल से पहले की तरह रेलवे हवाई जहाज में किराये में 50 प्रतिशत छूट दी जाए। बैठक को ताराचंद सैनी व बनीसिंह ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया सदस्यता अभियान चलाकर संगठन की सदस्य संख्या बढ़ाई जाए और नियम अनुसार जिला व स्टेट का शेयर समय समय पर भुगतान किया जाए। उन्होंने कहा कि संघर्ष फंड सभी ब्लॉक नियम अनुसार जिला व स्टेट का भुगतान करें। सभी ब्लॉक व जिला अपने अपने स्तर पर बैंक में खाता खुलवाना सुनिश्चित करें, ताकि आय व्यय का हिसाब किताब सुरक्षित रह सकें। सभी ब्लॉक अपने सदस्यता की सूची जिला कमेटी में प्रदान करें, सभी ब्लॉक अपना ऑडिट जिला ऑडिटर सतपाल शर्मा से करवाकर जिला ऑडिटर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करें।*

### सैनी धर्मशाला कुरुक्षेत्र में होगी बैठक

रिटायर्ड कर्मचारी जगनलाल निनानिया ने बताया कि स्टेट कार्यकारिणी की बैठक सैनी धर्मशाला कुरुक्षेत्र में होने निश्चित की गई है। जिसमें जिला प्रधान सचिव व कोषाध्यक्ष भाग लेंगे। वहीं 22 व 23 फरवरी को अखिल भारतीय राज्य सरकारी पेंशनर फेडरेशन का सम्मेलन सैनी धर्मशाला कुरुक्षेत्र में होगा। उन्होंने बताया कि जिला संगठन का चुनाव लगभग एक साल पहले हुआ था। इसलिए जिला कोषाध्यक्ष आय व्यय का बोरा जिले की बैठक में प्रस्तुत करें।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 12 अक्टूबर 2025
P-1

दीपावली सदियों से धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व के रूप में मनाई जा रही है। लेकिन अब इसका स्वरूप राष्ट्रीय, आर्थिक और भावनात्मक एकता का रूप ले चुका है। दीपावली की चमक अब केवल तेल के दीयों में नहीं रही बल्कि डिजिटल स्क्रीन, वैश्विक समारोहों, आर्थिक गतिविधियों में भी हर जगह भारत की सांस्कृतिक शक्ति के रूप में झिलमिलाती है।

# धर्म-संस्कृति-आस्था के साथ अर्थव्यवस्था का महापर्व दीपावली

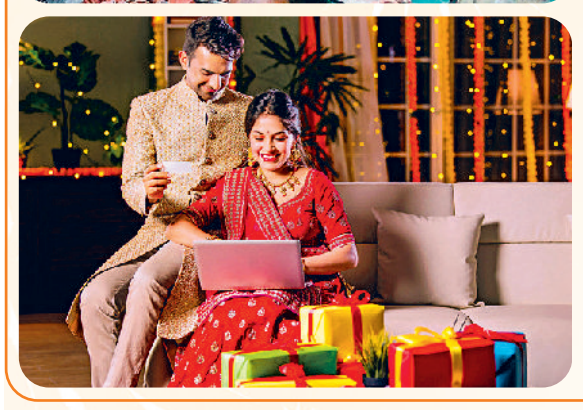

{ आवरण कथा }
शैलेंद्र सिंह

दीपावली अगर पहले के दौर में केवल दीप और पूजा का पर्व था, तो आज यह डिजिटल भारत की संपन्नता और सशक्ति का प्रतीक बन चुकी है। आज हर राज्य, हर भाषा और हर वर्ग के लोग अलग-अलग तरीके से दीपावली को जोरदार तरीके से सेलिब्रेट कर रहे हैं। यह भारत के किसी भी अखिल भारतीय उत्सव का सबसे बड़ा सिंबल है। एक जमाना था, जब गांवों में मिट्टी के दीयों से रोशनी की कतार झिलमिलाती थी। आज उत्तर हो या दक्षिण, पूर्व हो या पश्चिम, देश के सभी शहरों में एलईडी की इंद्रधनुषी झालरें दीपावली के मौके पर संपन्नता की अठखेलियां करती हैं। साथ ही ऑनलाइन दुनिया में डिजिटल ग्रीटिंग्स की भरमार है। दरअसल, दिवाली अब हमारे आर्थिक, सांस्कृतिक वजूद का इंजन बन चुकी है।

## होगी कई लाख करोड़ की खरीदारी

दीपावली अब केवल आस्था का त्योहार नहीं बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का महापर्व है। यकीन न आए तो कुछ आंकड़ों पर गौर कर सकते हैं। साल 2024 की दीपावली तिमाही में खरीदारी तकरीबन 4.5 लाख करोड़ तक पहुंच गई थी। इस साल अनुमान है कि यह आंकड़ा 6 लाख करोड़ तक पहुंचेगा। मतलब बिहार जैसे राज्य के लगभग दो सालों का समूचा सालाना बजट के बराबर दिवाली के मौके पर खरीदारी में खर्च हो जाएगा। अकेले ई-कॉमर्स सेक्टर में ही दीपावली के आस-पास अब तक 90 हजार करोड़ की ऑनलाइन बिक्री हो चुकी है। उम्मीद है कि यह तकरीबन पौने दो से दो लाख करोड़ तक पहुंचेगी। ऑटो मोबाइल्स, रियल एस्टेट, इलेक्ट्रॉनिक और ज्वेलरी जैसे क्षेत्र में इस सीजन बिक्री के नए मानदंड रचे जाने हैं। मतलब यह कि दिवाली अब भारतीय अर्थव्यवस्था की धड़कती नब्ज बन चुकी है।

## डिजिटल कंपनियों को भी रहता है इंतजार

यह त्योहार अब केवल धार्मिक नहीं, आर्थिक और सांस्कृतिक एकता का भी बड़ा अवसर बन चुका है। आज दीपावली एक किसान से लेकर स्टार्टअप फाउंडर तक के लिए आर्थिक रोशनी की नई उम्मीद बनकर आती है। इस डिजिटल युग में दीपावली सिर्फ घरों या मंदिरों तक नहीं सीमित बल्कि सोशल मीडिया, डिजिटल क्रिएटिविटी और तकनीकी नवाचार का त्योहार बन गई है। 'हैप्पी दीपावली' कहना या लिखना, हर साल दुनियाभर के ट्रेंडिंग टॉपिक्स में शामिल रहने वाला सबसे हॉट विषय होता है। गूगल और एप्पल जैसी कंपनियां दीपावली का महीनों पहले से इंतजार करती हैं। इस मौके पर विशेष डूडल और थीम्स जारी करती हैं। डिजिटल आर्टिस्ट और कंटेंट क्रिएटर्स दीपावली को भारतीय पहचान का वैश्विक प्रतीक मानते हैं। भारत के स्टार्टअप इस मौके पर विशेष फेस्टिव कैंपेन लांच करते हैं जैसे- मेड इन इंडिया जिसमें एक नया संदेश छिपा होता है। कहने का मतलब यह कि दीपावली अब घर-घर की नहीं बल्कि स्क्रीन-स्क्रीन की रोशनी बन चुकी है और पूरे भारत को एक डिजिटल सांस्कृतिक धारा में जोड़ रही है।

## बन चुका है ऑल इंडिया फेस्टिवल

आज दीपावली भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से परे जा चुकी है। जहां पहले लोग कहते थे कि हर राज्य अपने-अपने तरीके से दीपावली मनाता है, वहीं अब देखा जा रहा है कि यह संपूर्ण भारत का एक साझी रंगत वाला त्योहार बन चुका है। मॉल्स, कालोनियां, ऑफिसेस, हाउसिंग सोसायटी आदि सब जगह दीपावली के अखिल भारतीय सेलिब्रेशन के दर्शन होते हैं। आज दिवाली भाषा, धर्म, क्षेत्र और वर्ग की सीमाओं को लांघकर अखिल भारतीय उत्सव बन चुकी है, जो सभी भारतीयों को एक साझा पहचान देती है।

## विदेशों में भी जगमगाती दीपावली

आज दुनिया में ब्रांड इंडिया की चमक का एक हिस्सा जगमग दीपावली भी है। भारत को वैश्विक ब्रांड के रूप में देखें तो दीपावली उसकी सिग्नेचर इमोशन बन चुकी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर न्यूयॉर्क, लंदन, दुबई और सिंगापुर में इंडियन दिवाली नाइट आयोजित होती हैं। बुर्ज खलीफा पर भारतीय दिवाली की लाइट शो अब हर साल की परंपरा है। व्हाइट हाउस में, ब्रिटिश पार्लियामेंट और कनाडा में, लेचिसलेचर और दीपावली के दीये जलाना अब ग्लोबल सॉफ्टपावर का प्रतीक है। जरा गौर कीजिए इन आयोजनों के केंद्र में सिर्फ धार्मिकता नहीं होती बल्कि भारतीय आधुनिकता, बहुलता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास के दर्शन होते हैं। यह वही आत्मविश्वास है, जो बताता है कि भारत अपनी परंपरा को 21वीं सदी के फ्रेम में फिट करने में सक्षम है।

## आधुनिकता-आर्थिक संपन्नता का प्रतीक

देश के हर क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियों की चरम स्थिति, छोटे दुकान से लेकर ई-कॉमर्स के दिग्गज तक दीपावली को अपनी ताकत से जोड़ते हैं। इस तरह यह एक फेस्टिवल टेक्नोलॉजीकरण भी है। डिजिटल पेमेंट, ई-गिफ्ट और सोशल मीडिया ने त्योहार को एक साझा राष्ट्रीय अनुभव बना दिया है। इसलिए दीपावली अब भारत का कल्चरल एक्सपोर्ट बन चुकी है, जो भारतीय प्रवासियों के माध्यम से विश्व स्तर पर मनायी जाती है। कुल मिलाकर दीपावली अब महज एक धार्मिक या सांस्कृतिक त्योहार भर नहीं बल्कि यह भारत की आर्थिक ताकत और आधुनिकता का सबसे सशक्त प्रतीक बन चुका है। *

### देश का पावरफुल कल्चरल सुपर ब्रांड

**आज के** दौर में दीपावली आधुनिक भारत का सबसे पावरफुल सुपर ब्रांड बन चुकी है। हर सफल आधुनिक राष्ट्र के पास एक साझा भावनात्मक प्रतीक होता है। जैसे अमेरिका के पास थैंक्स गिविंग, चीन के पास स्प्रिंग फेस्टिवल, जापान के पास चेरी ब्लॉसम फेस्ट, उसी तरह भारत के पास दीपावली जैसा पर्व है। यह त्योहार भारत की सांस्कृतिक निरंतरता और आधुनिक आकांक्षाओं को भी बहुत करीब से व्यक्त करता है। दीपावली आज महज एक सालाना पर्व नहीं है बल्कि यह भारतीय संस्कृति की गहराई, हमारी तकनीकी उन्नति की चमक, व्यापार की मजबूती, उसकी सक्रियता और सामाजिक एकता की प्रतीक भी बन चुकी है यानी, दिवाली अब केवल धार्मिक नहीं बल्कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक गतिविधि है, जो भारत को परंपरा से प्रगति तक जोड़ने वाला पुल बनाती है। दीपावली आज अखिल भारतीय आधुनिक संस्कृति की धुरी है। हर भारतीय समुदाय हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख अपने-अपने अर्थों में इसे अपनी विरासत का जीवंत हिस्सा मानते हैं।

एक समय तक दीपावली के मौके पर परिवार, मित्रों, रिश्तेदारों के साथ खेल के तौर पर जुआ खेलने की परंपरा रही। लेकिन हाल के वर्षों में ऑनलाइन गेमिंग के जरिए गैंबलिंग की लत ने बड़ा सामाजिक-आर्थिक संकट खड़ा कर दिया है। इस बारे में अवेयर रहने की जरूरत है।

# भारी नुकसान दे सकती है ऑनलाइन गेमिंग की लत

{ अवेयरनेस }
एन.के. अरोड़ा

शगुन और परंपरा के नाम पर जिस तरह से हाल के सालों में लोगों द्वारा दीपावली के मौके पर ऑनलाइन जुए का ट्रेंड बढ़ा है, उसके कारण गैंबलिंग की लत दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। यह न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक चिंता का भी विषय है। परंपरा के नाम पर आजमाई जा रही इस खतरनाक आदत के कारण लोगों की जिंदगी ही आर्थिक संकट से घिर गई है।

**परंपरा के नाम पर ऑनलाइन गेमिंग:** यह मान्यता है कि दीपावली के अवसर पर जुआ खेलना शुभ होता है। इसलिए लोग परंपरा के नाम पर आमतौर पर दीपावली के मौके पर आपस में जुए की गतिविधियों पर हाथ आजमाते हैं। लेकिन कई बार इसके जरिए दीपावली जैसे रोशनी, मेलजोल और खुशियों के त्योहार को परेशानियों का सबब बना लेते हैं। नतीजतन रोशनी के इस त्योहार के ऐन मौके पर उनके घरों में परेशानियों का अंधेरा छा जाता है।

**बुरा एडिक्शन है ऑनलाइन गेमिंग:** दीपावली की रात ही नहीं ऑनलाइन गैंबलिंग ऐसा एडिक्शन बन गया है, जो सामान्य दिनों में भी लोगों की बर्बादी का कारण बन रहा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि पुलिस भी इस बुराई पर चाहकर भी प्रभावी प्रतिबंध नहीं लगा पाती, क्योंकि यह सारी गतिविधि एक स्मार्टफोन की स्क्रीन या किसी डिजिटल एप्स तक सिमटकर रह गई है, जो एक क्लिक के साथ ही हमारी पकड़ से बहुत दूर जा चुकी होती है।

**क्यों-कैसे फंस जाते हैं इस दुष्चक्र में:** पहले जुआ खेलने के लिए ऐसी कोई खास सुरक्षित जगह ढूंढ़नी पड़ती थी, जहां तक पुलिस और समाज पर नैतिक दबाव बनाने वाले लोगों की पहुंच न हो या इन लोगों को यहां तक पहुंचने में मुश्किल हो। लेकिन आज की तारीख में ऑनलाइन गेमिंग या मोबाइल के स्क्रीन पर संपन्न होने वाला जुआ इतना आसान हो गया है कि हम जब चाहें और जहां से चाहें, इसे खेल सकते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि करोड़ों, अरबों के आर्थिक आधार वाली बड़ी-बड़ी कंपनियां इसके लिए हमें बोनस और विज्ञापन के जरिए ललचाती हैं। साथ ही लोगों को डिजिटल गतिविधियों के जरिए ललचाकर फंसाने वाली कंपनियां 'दिवाली ऑफर', 'लकी स्पिन', 'कैश बोनस', जैसी रसीली बातों से हमें फांसते हैं और देखते ही देखते हम इन पैसे चूसने वाली स्कीमों के चक्कर में फंस जाते हैं। बस एक जीत के जरिए जिंदगी को मालामाल करने की तमन्ना से हम अपने पास जो भी होता है, सब कुछ बड़ी आसानी से गंवा देते हैं और इस तरह धोखे-धोखे में लाखों, करोड़ों लोग ऑनलाइन गेमिंग में फैले गैंबलिंग के खेल से कंगाल हो जाते हैं।

**गंवा देते हैं हजारों करोड़:** हर साल लाखों लोगों की बर्बाद कहानियों के बावजूद, लोग इनसे सबक लेने की बजाय अगली बर्बाद कहानियों का हिस्सा बनने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। एक अनुमान के मुताबिक पिछले पांच सालों से हर साल दीपावली के मौके पर अनुमानतः आम लोग 15 से 20 हजार करोड़ रुपए तक इस ऑनलाइन जुए में गंवा बैठते हैं, जो उनकी जिंदगीभर की गाढ़ी कमाई होती है। यही कारण है कि आजकल रोशनी के इस पर्व में हर साल लाखों लोगों की जिंदगी में हमेशा-हमेशा के लिए अंधकार भर जाता है।

**कानूनी स्थिति:** हालांकि पब्लिक गैंबलिंग एक्ट 1867 के तहत जुआ एक सार्वजनिक सामाजिक अपराध है। लेकिन दुर्भाग्य से हमारी हथेली में अटके मोबाइल की स्क्रीन पर धूम-धड़ाके से चलने वाली जुए की महफिलों पर कानून नहीं लागू होता था। हालांकि इस सबके बावजूद तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश में ऑनलाइन गेमिंग के कई रूपों पर प्रतिबंध लगाया है, बावजूद इसके दिवाली की रात जुए के लिए बेकरार करोड़ों लोगों को यह आंशिक प्रतिबंध बर्बाद होने से नहीं बचा पाते। यही वजह है कि जोर-शोर से लाखों लोग ऑनलाइन गेमिंग पर हर तरह से प्रतिबंध लगाने की बात करते हैं। लेकिन आजादी और लोकतंत्र के नाम पर उतने ही लोग इसे रेगुलेट करने की वकालत करते हैं। यही कारण है कि हर साल लाखों लोगों के ऑनलाइन गेमिंग के जरिए बर्बाद हो जाने के बावजूद इस पर प्रतिबंध नहीं लग रहा। हालांकि 1 अक्टूबर से देश भर में ऑनलाइन गेमिंग विधेयक 2025 लागू हो गया है। इसमें रियल मनी गेमिंग संचालित करने वाली कुछ कंपनियों और एप्स पर बैन लगा दिया गया है। इसका प्रचार करने वालों पर भी कड़े दंड का प्रावधान है।

**दूर रहने का लें संकल्प:** दीपावली की रोशनी तभी हमारे लिए सार्थक होगी, जब वह हमारे परिवारजनों के चेहरों पर खुशियों का उजास फैलाए, न कि ऑनलाइन गेमिंग के जरिए बर्बादी का अंधेरा छाए। इसलिए इस साल ऑनलाइन गेमिंग से दूरी बनाने के लिए संकल्प लें। *

{ गजल }
अब्दुल कलाम

## मन के फेर हैं बाबा

इधर देखो जिधर देखो मचा अंधेर है बाबा
सलामत दिन निकल जाए तो समझो खैर है बाबा

कोई सूरत तो फिर निकले कि सच का बोल-बाला हो
मगर निकले भी कैसे झूठ इतना दिलेर है बाबा

आग की जद में शहर जो आ गया तो फिर
बचेगा कुछ नहीं हिजरत में फिर क्यों देर है बाबा

मिटाने हम चले हैं देश की फिरका परस्ती को
जहां पर खून के रिश्तों में देखे बैर है बाबा

यहां सर पे कफन हमने ही बांधा वक्त जब आया
वो कहते हैं कि हम उनके लिए अब गैर हैं बाबा

फाइलों में दब के रह जाती है अब फरियाद भी
कोर्ट-कचहरी न्याय सब मन के फेर हैं बाबा

{ लघुकथाएं }

# अनमोल लम्हे

रिटायरमेंट के बाद निर्माण नगर में ही रहना विनीत। सभी दोस्त साथ में मस्ती करेंगे।' शैलेंद्र ने विनीत से कहा, जब वह किसी काम से निर्माण नगर आया हुआ था।

'हां! देखता हूं।' विनीत ने कहा। पर मन ही मन वह सोच रहा था कि क्या है इस शहर में? दिल्ली में जिस सोसाइटी में वह रहता है, वहां कितना अच्छा पार्क है, जिम है, स्विमिंग पूल है। हर अवसर पर कुछ न कुछ बढ़िया कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। अच्छा जीवन कटेगा वहां। यही सब सोचकर रिटायरमेंट के बाद विनीत निर्माण नगर के बजाय दिल्ली में ही बस गया। सुबह मॉर्निंग वॉक, फिर जिम और उसके बाद स्विमिंग। बीच-बीच में सोसायटी की मीटिंग और अकसर तरह-तरह के कार्यक्रमों में शामिल होना। विनीत का यही रूटीन हो गया था। वह सोचने लगा कि जीवन का पूरा मजा वह ले रहा है।

कुछ समय बाद उसे किसी काम से फिर निर्माण नगर जाने का मौका मिला। तब तक उसके अधिकांश दोस्त रिटायर हो चुके थे। उसने देखा कि सुबह-सुबह कई दोस्त मॉर्निंग वॉक पर इकट्ठे होते हैं। फिर शुरू होती हैं बचपन की बातें और हंसी-ठहाके। कोई अपने टीचर के नकल उतारने वाली हरकत के बारे में बताता तो कोई एक-दूसरे के साथ की जाने वाली शैतानियों के किस्से सुनाता। और भी कई तरह-तरह की बातें वे सब आपस में करते हैं। इसी तरह शाम को भी सारे दोस्त इकट्ठे हो जाते और फिर शुरू हो जाता ठहाकों का दौर। दिल खोल कर हंसते थे सभी दोस्त। ऐसा लगता मानो फिर से वे बचपन की मस्ती का आनंद लेने लगे हों।

अपने दोस्तों के मस्ती भरे अंदाज को देखकर विनीत सोचने लगा वैसे तो दिल्ली में जीवनशैली और सुख-सुविधाएं यहां से बेहतर हैं, पर बचपन के दोस्तों के साथ यह मौज-मस्ती वहां नहीं मिल पाती है। विनीत ने मन ही मन खुद से कहा, 'सच में ये आनंद भरे पल अनमोल हैं।' *

-विनय कुमार पाठक

# फॉलोवर्स

आदित्य ने सुबह नींद से जगते ही अपना इंस्टा अकाउंट चेक किया। 'बधाई हो! आपके फॉलोवर्स की संख्या एक लाख हो गई है।' मोबाइल पर नोटिफिकेशन था। आदित्य जोश में आ गया। मुट्ठियां बंद कर हाथों को झटकते हुए कहा, 'यस!' वह काफी दिनों से अपने इंस्टा अकाउंट पर फॉलोवर्स की संख्या बढ़ाने की कोशिश में लगा हुआ था। आदित्य मुंबई में रहता है। उसका टू बीएचके फ्लैट है। कुछ वर्ष पहले उसके मम्मी-पापा की एक दुर्घटना में मौत हो गई थी। वह उनकी अकेली संतान है। बस उसके दादाजी हैं, जो मुंबई से दूर एक गांव में रहते हैं। जब तक मम्मी -पापा रहे तब तक वह उनसे मिलने जाता था। उसके बाद वह कभी गांव नहीं गया। अभी वह अपना मोबाइल देख ही रहा था कि दरवाजे की घंटी बजी। उसने जाकर दरवाजा खोला। सामने एक बुजुर्ग आदमी थे।

'जी कहिए..।'

'तुम निशिकांत के पोते आदित्य हो?'

'जी, आप कौन?'

'मैं दयाल! निशिकांत ने मुझे भेजा है। उसकी तबीयत बहुत खराब है। शायद अब ज्यादा जीवित न रहे। मरने से पहले तुमको देखना चाहता है। मेरे साथ अभी गांव चलो।'

'अभी! एकदम से?'

'हां, नहीं तो शायद तुम अपने दादाजी को आखिरी बार भी ना देख सको।'

'देखिए, अभी मेरे पास बहुत सारे जरूरी काम पेंडिंग हैं। ऐसा करिए, आप जाकर उनसे कह दीजिएगा, मैं रविवार को आऊंगा। हां मेरा मोबाइल नंबर भी लेते जाइए। मुझे फोन पर दादाजी से बात करा दीजिएगा।'

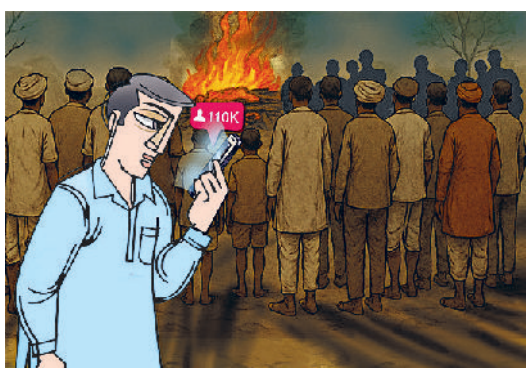


दयाल निराश होकर वापस लौट गए। आदित्य चंद मिनटों तक दादाजी के बारे में सोचता रहा। जैसे ही उसे फॉलोअर्स का ख्याल आया वह उन्हें भूल गया। उसके हाथ तेजी से मोबाइल पर चलने लगे। अगले दिन सुबह-सुबह उसके पास फोन आया, 'तुम्हारे दादाजी नहीं रहे।' दयाल की ही आवाज थी।

'ओह! मैं आता हूं।' आदित्य ने कहा। उसने फौरन अपने बैग में दो जोड़ी कपड़े लिए और गांव के लिए रवाना हो गया। करीब पांच-छह घंटे का रास्ता था। मगर जिस ट्रेन में वह बैठा था, वह जगह-जगह रुक रही थी। छह घंटों में वह आधे रास्ते भी न पहुंच सका। अगले स्टेशन पर पहुंचकर वह ट्रेन से उतर गया और गांव जाने वाली बस पकड़ ली। मगर दुर्भाग्य कि बीच में सड़क धंसने से बस आगे न जा सकी। गांव अब भी तीस किलोमीटर दूर था। वह बाइक सवारों से लिफ्ट लेता हुआ किसी तरह गांव पहुंचा। तब तक काफी देर हो चुकी थी। सूरज ढल चुका था। अंधेरा हो रहा था। हर ओर सूनापन फैल रहा था। दादाजी के घर के दरवाजे पर कुछ महिलाएं खड़ी थीं। उसने उनसे दादाजी के बारे में पूछा।

'हमें लगा अब तुम नहीं आओगे। इसलिए गांव वाले उनको श्मशान घाट ले गए।' वह श्मशान घाट की ओर दौड़ा। उसके दादाजी का शव चार लोग अपने कंधे पर उठाए चले जा रहे थे। पीछे-पीछे ढेर सारे गांव वाले थे। वह वहीं ठिठक गया। उसे तो लगा था, उसके बिना दादाजी को भला कौन कंधा देगा। मगर यहां तो पूरा गांव है दादाजी के पीछे। गांव वालों ने चिता सजाई और दादाजी का शव अग्नि को समर्पित कर दिया। आदित्य भीड़ के पीछे ही ठिठका रहा, आगे नहीं आया। तभी उसके मोबाइल पर नोटिफिकेशन आया 'बधाई हो! आपके फॉलोवर्स की संख्या एक लाख दस हजार हो गई है।' *

-सरस्वती रमेश

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

## जिंदगी@मगनपुर इस्टेट

वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय का तीसरा उपन्यास 'जिंदगी@मगनपुर इस्टेट' हाल में ही प्रकाशित होकर आया है। इस नॉस्टेल्जिक उपन्यास का मुख्य पात्र एक बुजुर्ग शख्स विमान भौमिक है, जो मगनपुर इस्टेट में बिताए अपनी किशोरावस्था के दिनों को याद करता है। लेकिन उसमें कहीं भी भावुकता का अतिरेक या पुराने दिनों के प्रति मोह की सांद्रता नजर नहीं आती है। वो खिलंदड़े अंदाज में बीती हुई घटनाओं को याद करता है। पिछली सदी के सातवें-आठवें दशक के बीच की पृष्ठभूमि पर रचा गया यह उपन्यास, उस दौर के मध्यवर्गीय परिवार के किशोरों की जीवनशैली, उनके सपने, उनकी बचकानी हरकतें और छोटी-छोटी खुशियों को भी बटोर लेने की उनकी ललक को बहुत रोचक तरीके से सामने लाता है। हालांकि इस उपन्यास का कथानक और उसमें उपस्थित सभी पात्र काल्पनिक हैं लेकिन जो भी लोग लेखक को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, वो सहज ही इस उपन्यास के कथा-तंतुओं से वास्तविक छवि को बुन सकते हैं। लेखक के किस्सागोई के अंदाज में पाठक को बांधे रखने का जादुई सामर्थ्य है। *

**पुस्तक:** जिंदगी@मगनपुर इस्टेट (उपन्यास)
**लेखक:** गोविंद उपाध्याय, **मूल्य:** 299 रुपए,
**प्रकाशक:** सर्वभाषा ट्रस्ट, दिल्ली

अमेजिंग स्पॉट्स / रजनी अरोड़ा

इन दिनों फेस्टिवल सीजन चल रहा है। आपके घर के आस-पास और बड़ी मार्केट्स में खूब रौनक और भीड़-भाड़ दिख रही होगी। बाजार ऐसा स्थान होता है, जहां से हम सभी अपनी जरूरत का हर सामान खरीद सकते हैं। लेकिन दुनिया में कुछ ऐसे भी बाजार हैं, जो अपनी खूबसूरती, भव्यता, अद्भुत सामानों की बिक्री और अनोखेपन के कारण बहुत मशहूर हैं। ऐसे ही कुछ अनोखे बाजारों और उनकी विशेषताओं पर एक नजर।

# ये हैं दुनिया के कुछ अनोखे-प्रसिद्ध बाजार

### डम्नोएन सडुआक फ्लोटिंग मार्केट

यह अनोखा बाजार थाईलैंड में बैंकॉक से लगभग 100 किमी. दक्षिण-पश्चिम में राजबुरी इलाके में लगता है। डम्नोएन मार्केट थाईलैंड के सबसे मशहूर और बड़े तैरते हुए बाजारों में से एक है। इस

बाजार का निर्माण 19वीं सदी के अंत में तत्कालीन राजा रामचतुर्थ के आदेश पर हुआ था। जिसका उद्देश्य माइकलोंग और थाची नामक नदियों को आपस में जोड़ना और उनके माध्यम से व्यापार को सुगम बनाना था। आज यह बाजार सदियों पुरानी थाई परंपरा को दर्शाता है। यहां महिला विक्रेता ज्यादा हैं, जो पारंपरिक कपड़े पहनकर लकड़ी की छोटी नावों पर सामान बेचती हैं। इनमें फल, सब्जियां, ताजा पका हुआ स्ट्रीट फूड, स्थानीय उत्पादों के साथ-साथ हस्तशिल्प का सामान होता है। यह बाजार सुबह सात से नौ बजे तक सबसे अधिक व्यस्त रहता है। इच्छुक खरीदार ही नहीं, इस अनोखी फ्लोटिंग मार्केट में घूमने और इसे देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक भी नाव से आते हैं।

### ईमा कीथेल मार्केट

यह अनोखा बाजार भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर की राजधानी इंफाल में लगता है। यह बाजार लगभग 500 वर्ष पुराना है और एशिया के सबसे बड़े बाजारों में गिना जाता है। ईमा केथेल बाजार की नींव 16वीं शताब्दी में लल्लुप काबा के विरोधस्वरूप हुई मानी जाती है। उस समय पुरुषों को जबरन बंधुवा मजदूर बनाने और दूरदराज के क्षेत्रों में काम करने के लिए भेजने की प्रथा थी। जिसके चलते महिलाओं को घर की आर्थिक जिम्मेदारी संभालने की जिम्मेदारी उठानी पड़ी। उन्हें खेती, विभिन्न खाद्य पदार्थ, घरेलू सामान, परंपरागत सिलाई-बुनाई, हस्तकला निर्मित वस्तुओं का निर्माण,

मछली पकड़ने जैसे कार्य करके अपने उत्पाद बेचने पड़े। तभी यह बाजार अस्तित्व में आया।

आज ईमा कीथेल मार्केट दुनिया में एकमात्र ऐसा बाजार है, जो पूरी तरह से महिला विक्रेताओं तकरीबन (6000) द्वारा संचालित किया जाता है। ईमा कीथेल नाम का मणिपुरी भाषा में अर्थ मां का बाजार है, जिसमें प्रायः सभी दुकानदारों को ईमा या मां कह कर संबोधित किया जाता है। यह मुख्यतया तीन खंडों में बंटा हुआ है। जहां घरेलू सामान, फल-सब्जियां, मसाले, विभिन्न प्रकार के जलीय जीव, मणिपुरी पारंपरिक वस्त्र और बुनाई के उत्पाद मिलते हैं। यह केवल एक व्यापारिक केंद्र नहीं, बल्कि मणिपुर की महिलाओं की आत्मनिर्भरता, सशक्तिकरण, गौरव और सामाजिक-आर्थिक महत्व का एक जीवंत प्रतीक है।

### मेकलॉन्ग रेलवे मार्केट

थाईलैंड के सामुन सोंग खराम प्रांत में लगने वाली मेकलॉन्ग रेलवे मार्केट को स्थानीय भाषा में तलात रोखूप या फोल्डिंग अंब्रेला मार्केट भी कहा जाता है। यह दुनिया के सबसे अनूठे और रिस्की बाजारों में से एक है। यह बाजार अपनी बिक्री वाले सामान के लिए नहीं, बल्कि एक्टिव रेलवे ट्रैक के किनारे बने होने और भारी आवाजाही के कारण मशहूर है। यानी, बाजार के दुकानदार ही नहीं, खरीदार भी रेलवे ट्रैक पर सामान खरीदते-बेचते हैं। यहां ताजे फल, सब्जियां, समुद्री भोजन और अन्य घरेलू सामान मिलता है। इस बाजार का सबसे बड़ा आकर्षण और अनोखापन है ट्रेन का बाजार के बीचों-बीच दिन में आठ बार गुजरना। जैसे ही ट्रेन के आने का हॉर्न बजता है, सभी दुकानदार रेलवे ट्रैक तक पहुंचने वाले अपनी-अपनी दुकान के तिरपाल, छतरियां और सामान तुरंत हटा लेते हैं। रेलवे ट्रैक पर बेखौफ चलने वाले खरीदार भी रास्ता देकर ट्रेन के गुजरने का इंतजार करते हैं। ट्रेन के चले जाने पर बिना देर किए दुकानें फिर सजा लेते हैं और कुछ पलों के लिए थमे बाजार की रौनक दुबारा शुरू हो जाती है। यह अनूठी दिनचर्या जहां स्थानीय वाणिज्य और रेल परिवहन के बीच तालमेल का एक शानदार उदाहरण है, वहीं यहां आने वाले पर्यटकों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होता है।

### ग्रैंड बाजार

तुर्की देश के इस्तांबुल शहर में स्थित ग्रैंड बाजार को तुर्की भाषा में कापाली चार्शी कहा जाता है। इसका निर्माण 1455 में ऑटोमन साम्राज्य के सुल्तान मेहमेद द्वितीय के आदेश पर शुरू हुआ था। अपनी जटिल वास्तुकला, गुंबददार छत और ऐतिहासिक भव्यता के कारण यह बाजार सिर्फ

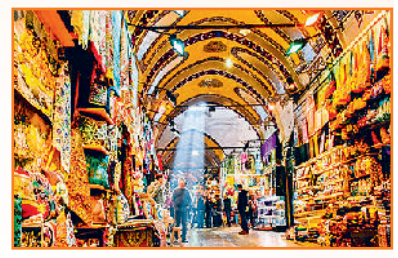

एक शॉपिंग डेस्टिनेशन नहीं है। बल्कि तुर्की की संस्कृति, इतिहास और एशिया-यूरोप के मध्य में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में इस्तांबुल की भूमिका को दर्शाता, जीता-जागता संग्रहालय भी कहा जा सकता है। आज ग्रैंड बाजार दुनिया के सबसे बड़े और सबसे खूबसूरत बाजारों में से एक है। इसमें 61 से अधिक कवर किए गलियारे और 4000 से अधिक दुकानें हैं। सदियों से व्यापार और वाणिज्य का केंद्र रहे ग्रैंड बाजार में लाखों पर्यटक और खरीदार रोजाना पहुंचते हैं। हस्तनिर्मित टर्किश कालीन, रंगीन सेरेमिक की वस्तुएं, सोने-चांदी के आभूषण, चमड़े के सामान के साथ विभिन्न प्रकार के मसाले, आकर्षण का केंद्र हैं। खरीदारी के लिए मोल-भाव करने का प्रचलन भी यहां है, जो आगुंतकों के खरीदारी के अनुभव को अधिक रोमांचक बना देता है। *

### डल झील बाजार

**भारत के** केंद्र शासित प्रदेश कश्मीर की डल झील पर लगता है यह तैरता हुआ डल झील सब्जी बाजार। डल झील के बीच पानी में थोड़े समय के लिए लगने वाला बाजार कश्मीर घाटी की संस्कृति और सुंदरता का अद्भुत प्रतीक माना जाता है। यह भारत का इकलौता और दुनिया के चुनिंदा अनोखे बाजारों में एक है, जो पानी के ऊपर लगते हैं। इस बाजार का नजारा डल झील की शांत नीली पृष्ठभूमि और पहाड़ों की छाया के बीच कश्मीरी जीवनशैली और प्राकृतिक संसाधनों के साथ निवासियों के गहरे जुड़ाव को भी दर्शाता है। डल झील बाजार में रोजाना सुबह पांच से सात बजे तक चहल-पहल बनी रहती है। यानी इस बाजार से यदि किसी को सब्जियां खरीदनी हैं, तो उसे सुबह जल्द ही आना पड़ेगा। स्थानीय विक्रेता लोग शिकारा नाव पर सवार होकर इस बाजार में खुद उगाई सब्जियां लेकर बिक्री के लिए आते हैं। वहीं खरीदार भी अपने शिकारा पर सवार होकर आते हैं और चलते हुए एक नाव से दूसरी नाव पर खरीद-फरोख्त करते हैं।

यूनीक पेंटिंग / मनीष कुमार चौधरी

सदियों पहले इटेलियन पेंटर लियोनार्डो दा विंची द्वारा बनाई गई अद्वितीय पेंटिंग मोनालिसा का आकर्षण अब भी बरकरार है। इस यूनीक पेंटिंग से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों पर एक नजर।

# मोनालिसा की रहस्यमयी मुस्कान

लियोनार्डो दा विंची की प्रसिद्ध पेंटिंग मोनालिसा ने कल्पना को जितना मोहित किया है, उतना शायद ही किसी कलाकृति ने किया हो। उनके इस चित्र का रहस्य और आकर्षण 30 इंच X 20 इंच के साधारण फ्रेम से कहीं आगे तक फैला हुआ है। वह किताबों, फिल्मों, गीतों और यहां तक कि एक कला चोरी का विषय भी है। समय के साथ पेंटिंग का वार्निश भले ही धुंधला और पीला पड़ गया हो, लेकिन उनकी भावपूर्ण मुस्कान और रहस्यमयी निगाहें अभी भी चमकती हैं।

**कौन थी असली मोनालिसाः** हालांकि मोनालिसा की पहचान को लेकर कुछ मतभेद हैं। लेकिन ज्यादातर विद्वानों और कला इतिहासकारों का मानना है कि यह चित्र फ्रांसीसी संभ्रांत महिला लिसा डेल जियोकोंडो का है, जो एक धनी रेशम व्यापारी फ्रांसेस्को डेल जियोकोंडो की पत्नी थी। लिसा का जन्म 1479 में हुआ था और उन्होंने 15 साल की उम्र में फ्रांसेस्को से शादी की थी। वह बहुत सुंदर और आकर्षक थीं। लियोनार्डो ने 1503 में मोनालिसा को चित्रित करना शुरू किया और 1517 तक इस पर काम किया। हालांकि यह पेंटिंग डेल जियोकोंडो के घर में कभी नहीं सजी। लेकिन दुनिया भर में बहुत प्रसिद्ध हुई।

**स्फुमाटो तकनीक का इस्तेमालः** इस चित्र को बनाने में लियोनार्डो ने अपनी विशिष्ट स्फुमाटो तकनीक का इस्तेमाल किया, जिसमें किसी व्यक्ति के फेस पेंटिंग में होंठों और आंखों के किनारों को सूक्ष्म रूप से धुंधला करके धुएं जैसा रहस्यमयी प्रभाव पैदा किया जाता है। इस प्रभाव से चित्र की आंखें विभिन्न भागों पर घूमती दिखती हैं, मुस्कुराहट बदलती हुई प्रतीत होती है। इस चित्र में ऐसे भाव प्रकट होते हैं, जिसको देखकर यह पक्के तौर पर नहीं कह सकते कि वह खुश है या उदास। वह मुस्कुरा रही है या नहीं। रहस्य का यही स्पर्श पेंटिंग के आकर्षण में इजाफा करता है और दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर देता है।

**रहस्यात्मक मुस्कानः** मोनालिसा की मुस्कान एक सीधी-सादी, हर्षित मुस्कान नहीं है। इसे अकसर उदासी, गंभीरता या किसी रहस्य का संकेत देने वाली मुस्कान

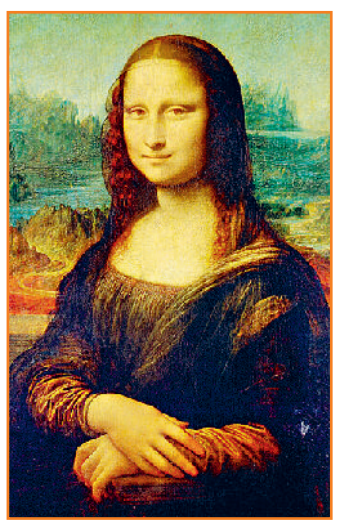

के रूप में वर्णित किया जाता है। यह मुस्कान लियोनार्डो की मानवीय अभिव्यक्ति और भावनाओं की बारीकियों को पकड़ने की असाधारण क्षमता को भी दर्शाती है। इस मुस्कान का पेंटिंग आर्ट पर अमिट प्रभाव रहा है, जिसने अनगिनत कलाकारों, लेखकों और फिल्म निर्माताओं को इसकी गहराई का पता लगाने और अपनी व्याख्याएं रचने के लिए प्रेरित किया है। इस पेंटिंग को अब तक की सबसे महान भावनात्मक पेंटिंग तक बताया गया है। कुछ इसे परंपरा से परे, परिभाषा से परे, छवि से परे सत्य की तलाश करते हुए पाते हैं। 'तुम्हारी मुस्कान मोनालिसा जैसी है।' यह कहने का मतलब है-रहस्य। यानी कोई मुस्कान रहस्य और जिज्ञासा से कैसे जुड़ जाती है, मोनालिसा की मुस्कान इसका एक सशक्त उदाहरण है। ऐसा माना जाता है कि मोनालिसा द्वारा अपनी मुस्कान में अपनी खुशी को पूरी तरह से व्यक्त न करने का कारण उनके पिछले नुकसान का दर्द था। यह सिद्धांत कई शोक संतप्त महिलाओं के साथ प्रतिध्वनित होता है।

**लियोनार्डो की कलात्मकता का कमालः** लियोनार्डो ने चीजों को गहराई से देखने की अपनी क्षमता और अध्ययनों को अपनी कला में भी शामिल किया। मानव शरीर रचना विज्ञान के बारे में लियोनार्डो की अंतर्दृष्टि और गहरी समझ, उनकी उत्कृष्ट कृतियों को अमूल्य बनाती है। एक अध्ययन के अनुसार, मोनालिसा के मुंह की मूल तस्वीर 97 प्रतिशत बार 'खुशी' के रूप में देखी गई। यह शोध इस बात के पुख्ता सबूत देता है कि मुस्कान वास्तव में खुशी का चित्रण है। मुस्कान के विभिन्न तत्वों का विश्लेषण और पुनर्निर्माण करके वैज्ञानिकों को इस बात की गहरी समझ मिली कि लियोनार्डो दा विंची अपनी कलात्मकता के माध्यम से दर्शकों की भावनाओं को कैसे प्रभावित करते थे।

**चोरी भी हो चुकी पेंटिंगः** लियोनार्डो अपनी इस पेंटिंग को 14 साल तक अपने साथ रखे रहे। उनके प्रशंसक कलाकारों और छात्रों ने उनके जीवनकाल में ही इस कलाकृति की प्रतियां बनाना शुरू कर दिया था। यह चित्र अंततः लियोनार्डो के अंतिम संरक्षक फ्रांस के राजा फ्रांसिस प्रथम के संग्रह में शामिल हो गया। लेकिन 21 अगस्त 1911 को यह पेंटिंग चोरी हो गई। अगले दो सालों तक उसकी चोरी की कहानी एक सांस्कृतिक सनसनी बनी रही। वर्ष 1913 में विंसेंजो पेरुगिया नामक व्यक्ति पकड़ा गया, जिसने इसे चुराया था। इस तरह मोनालिसा वापस अपने फ्रेम में पहुंच गई। *

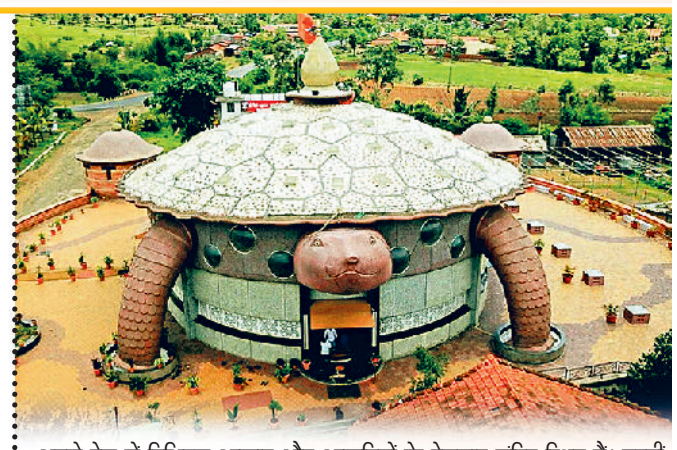

अपने देश में विभिन्न आकार और आकृतियों के बेशुमार मंदिर स्थित हैं। इन्हीं में से एक कछुए की आकृति वाला अनूठा मंदिर महाराष्ट्र के कोल्हापुर में स्थित है। इस मंदिर की विशेषताओं और इससे जुड़ी निर्माण कथा के बारे में जानिए।

# कछुए की आकृति वाला अजब-अनूठा मंदिर

रोचक / अशोक वाधवाणी

अपने भारत देश में बहुत सारे ऐसे अद्भुत, अनूठे मंदिर हैं, जिन्हें देखने वाला मंत्रमुग्ध होकर निहारता रह जाता है। इनकी स्थापत्य कला का नायाब नमूना हर किसी को अचरज से भर देता है। कुछ की संरचना इतनी भव्य और अनूठी है कि उसे देखने दुनिया भर से लोग आते हैं। कुछेक मंदिर तो ऐसे हैं, जो आकार में छोटे हैं, लेकिन उनमें लोगों को आकर्षित करने की भरपूर क्षमता है। ऐसा ही एक अनोखा मंदिर पश्चिम

अपने अनोखे स्ट्रक्चर के कारण प्रसिद्ध है यह मंदिर

महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के पैजार वाडी नामक छोटे से स्थान में स्थित है, जो कि पन्हाला हिल स्टेशन के निकट है। कोल्हापुर-रत्नागिरी रोड पर, कोल्हापुर से महज 25 किमी. की दूरी पर बने इस मंदिर की विशेषता है, इसका कछुए की अनोखी आकृति का होना। कछुआ आकृति वाला दूसरा कोई मंदिर पूरे महाराष्ट्र में और कहीं नहीं है।

**निर्माण से जुड़ी मान्यताः** इस मंदिर के निर्माण से जुड़ी मान्यता के अनुसार एक समय में यहां पर श्रीदत्त चिले महाराज के नाम से एक प्रसिद्ध संत हुआ करते थे। वे अपने अनुयायियों के साथ अलग-अलग जगहों का भ्रमण किया करते थे। कोल्हापुर शहर के आस-पास की जगहों जैसे- टेंबलाई, नृहिंहवाड़ी, कोकण क्षेत्र में जोंध मारुति आदि के अलावा पंढ़रपुर जैसी धार्मिक जगहों पर वे अकसर जाते रहते थे। वे जहां भी जाते थे, उस इलाके में रहने वाले कछुओं को अवश्य याद करते थे। किसी स्थान पर पहुंचकर वे जब अपने अनुयायियों से कहते कि कछुआ यहीं-कहीं होना चाहिए, तो उनके शिष्यों की भाग-दौड़ शुरू हो जाती। उन शिष्यों के अचरज का ठिकाना नहीं रहता, जब गुरुदेव के कहे स्थान पर कछुए का दर्शन हो जाता था। श्रीदत्त महाराज का कछुए के प्रति इतना लगाव-जुड़ाव क्यों था? इसकी सही-सही जानकारी नहीं मिली। लेकिन उनके अनुयायी और शिष्य मानते थे कि महाराज जहां कह देंगे, वहां कछुआ जरूर दिख जाता था। वर्ष 1986 में उनके देह त्यागने के बाद उनकी समाधि बनाई गई। मंदिर ट्रस्ट के सारे सदस्यों ने योजना बनाई कि चिले महाराज का कछुए के प्रति आकर्षण को ध्यान में रखकर कछुए की आकृति वाला मंदिर बनवाया जाएगा।

**मंदिर की संरचना-विशेषताः** कुल 5000 स्क्वायर फीट एरिया में बने इस मंदिर की ऊंचाई 51 फुट, लंबाई 60 फुट और चौड़ाई 80 फुट है। इसकी विशेषता यह है कि मंदिर के निर्माण में किसी भी खंबे का सहारा नहीं लिया गया है। इसकी खूबियों, खासियतों को ध्यान में रखकर ही एक अमेरिकन संस्था ने इसे वर्ष 2005 'आउटस्टैंडिंग स्ट्रक्चर ऑफ द ईयर' के पुरस्कार से सम्मानित किया है।

**ऐसे किया गया निर्माणः** इस मंदिर की योजना को मूर्त रूप देने के लिए पुंडलिक राव इंगले ने विशेष प्रयास किए थे। इसे बनाने के लिए समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर आर्किटेक्ट्स द्वारा डिजाइनें मंगाई गईं। आखिरकार 15 में से एक आर्किटेक्ट प्रमोद बेरी की डिजाइन का चयन किया गया। इस तरह मंदिर का निर्माण पूरा किया गया। इस मंदिर के अंदर ही चिले महाराज की प्रतिमा स्थापित की गई है, जो श्रद्धालुगणों की आस्था का केंद्र है।

**लगता है श्रद्धालुओं का जमघटः** ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष बाबा साहब चव्हाण के अनुसार देश के कोने-कोने से श्रद्धालुओं का तांता, दर्शन करने के लिए इस मंदिर में लगा रहता है। कई विशेष धार्मिक अवसरों जैसे- श्रीदत्त जयंती, चिले महाराज जी की जन्मतिथि, पुण्यतिथि, हर माह की अमावस्या, गुरु पूर्णिमा, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आदि धार्मिक-आध्यात्मिक-सामाजिक अवसरों पर कई कार्यक्रमों का यहां आयोजन किया जाता है। *

जो फिल्में कॉमर्शियली सक्सेसफुल हैं, जरूरी नहीं कि वे कालजयी फिल्में भी हों। ऐसे ही यह भी जरूरी नहीं कि सदाबहार कालजयी फिल्मों का बॉक्स-ऑफिस रिकॉर्ड भी अच्छा रहा हो। बॉलीवुड की कुछ क्लासिक और कॉमर्शियली सक्सेसफुल फिल्मों के फंडे पर एक नजर।

# बॉलीवुड की क्लासिक फिल्में वर्सेस कॉमर्शियली हिट फिल्में

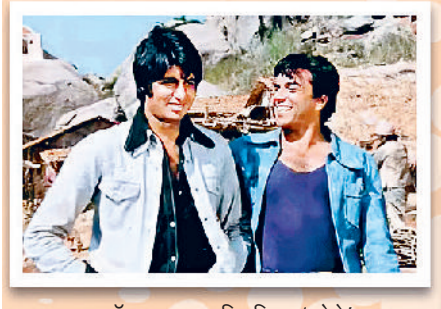

ब्लॉकबस्टर सुपरहिट फिल्म 'शोले'

कल्ट क्लासिक फिल्म 'मुगल-ए-आजम'

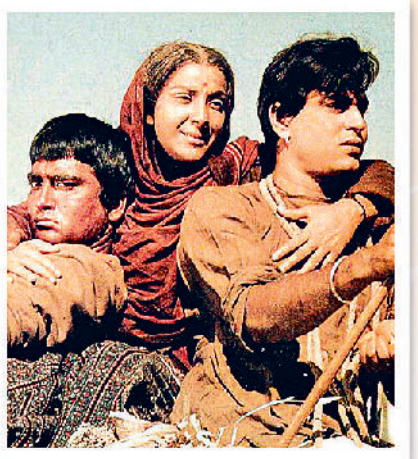

कालजयी फिल्मों में शामिल है 'मदर इंडिया'

सिल्वर स्क्रीन / हेमंत पाल

कालजयी फिल्में वे होती हैं, जिनमें कलात्मक उत्कृष्टता हो। वे सिर्फ दर्शकों का मनोरंजन ही नहीं करतीं, ये फिल्में ऐसे विषयों से जुड़ी होती हैं, जो मानवीय जीवन और अनुभव के विभिन्न पहलुओं को सामने लाने का माध्यम बनती हैं। इनकी प्रासंगिकता तात्कालिक नहीं होती। ये फिल्में दशकों बाद भी दर्शकों से जुड़ने में सक्षम रहती हैं। हालांकि बॉक्स ऑफिस पर फिल्मों की कारोबारी सफलता भी बहुत मायने रखती है, पर सबसे बड़ी सफलता है किसी फिल्म का कालजयी होना।

**कॉस्टिंग-इनकम-सक्सेस का फंडाः** यह बात सच है कि किसी भी फिल्म के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन या फिल्म से इनकम के आधार पर उसे हिट या फ्लॉप का तमगा दे दिया जाता है। फिल्म की कमाई का सीधा सा अर्थशास्त्र यह है कि फिल्म अपनी कुल लागत से ज्यादा कारोबार करे। जो फिल्म जितना अधिक बिजनेस करती है, उस हिसाब से उसकी सफलता का आकलन किया जाता है।

**बॉक्स ऑफिस पर सक्सेस फैक्टर्सः** बॉक्स ऑफिस पर फिल्मों की सक्सेस के अनेक फैक्टर्स होते हैं। आज के दौर में फिल्में अकसर जबर्दस्त एडवर्टाइजमेंट के साथ रिलीज होती हैं, जो तत्काल टिकट-बिक्री को बढ़ाती हैं। उनकी मार्केटिंग और प्रचार का भी मैजिकल अट्रैक्शन पैदा किया जाता है। यही दर्शकों को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि यह फंडा हर फिल्म के लिए सफल नहीं होता, इसलिए क्योंकि ये इफेक्ट टेंपरेरी हो सकते हैं, जो ऑडियंस को एक बार थिएटर तक खींच सकते हैं, लेकिन अगर फिल्म कंटेंट में दम नहीं है तो कुछ ही समय में सारा प्रचार का जादू फेल भी हो जाता है।

**क्लासिक फिल्मों की खासियतः** सवाल यह भी है कि अधिक निर्माण लागत और अच्छी-खासी कमाई वाली सभी फिल्में क्या लंबे समय तक दर्शकों को याद रह पाती हैं? इसका जवाब है, शायद नहीं, क्योंकि फिल्में महंगी निर्माण लागत या कमाई से नहीं, बल्कि अपने कथानक, निर्देशन और कलाकारों के अभिनय से याद रखी जाती हैं। बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में भी आईं, जिसने व्यावसायिक रूप से बड़ी सफलता पाई, लेकिन उन फिल्मों की कहानी या कलात्मकता ऐसी नहीं थी कि उन्हें समय के साथ याद रखा जाए। वहीं कुछ फिल्में कम बजट में बनीं, कम चलीं, लेकिन कालजयी हुईं। करोड़ों का कारोबार करने वाली सभी सुपरहिट फिल्में कालजयी इसलिए नहीं बन पातीं क्योंकि बॉक्स ऑफिस पर सफलता व्यावसायिक पहलुओं जैसे मार्केटिंग, प्रचार और दर्शकों की तात्कालिक पसंद पर निर्भर होती है। जबकि कालजयी फिल्में समय की कसौटी पर खरी उतरने वाली कला, गहराई और स्थाई सामाजिक प्रासंगिकता से जन्म लेती हैं। बॉक्स ऑफिस पर किसी फिल्म का हिट होना, अकसर एक विशिष्ट समय की प्रवृत्ति होती है, जो समय के साथ धुंधली हो सकती है। लेकिन कालजयी फिल्में मानवीय भावनाओं, विचारों और सामाजिक बदलावों को पकड़ती हैं, जो उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी प्रासंगिक बनाती हैं।

**बहुत कम बनती हैं कालजयी फिल्मेंः** सौ सालों से ज्यादा लंबे भारतीय फिल्म इतिहास में आज भी ऐसी फिल्में अंगुली पर गिनी जा सकती हैं, जो हर दौर में पसंद की जाती रही हैं। 'कालजयी' का मतलब है, समय के साथ अपनी प्रासंगिकता और महत्व को बनाए रखना। कालजयी फिल्में समय काल के सामाजिक रुझानों, तकनीकी नवाचारों या विशिष्ट जनसांख्यिकी को पूरा करती हैं, जो समय के साथ बदल भी सकती हैं।

**कालजयी फिल्मों के जरूरी तत्वः** अगर फिल्मों को कालजयी बनाने वाले तत्वों की बात की जाए, तो उनमें कलात्मक गुणवत्ता बेहद जरूरी है। कई व्यावसायिक फिल्में तकनीकी या कलात्मक गहराई की कमी दिखाती हैं। प्रासंगिकता के नजरिए से कहा जाए, तो कालजयी फिल्में सार्वभौमिक विषयों जैसे प्यार, न्याय या मानवीयता की नैतिक दुविधाओं को उजागर करती हैं, जो किसी भी समय में दर्शकों के साथ जुड़ जाती हैं। ऐसी फिल्में जो समाज में गहराई से जुड़ती हैं, महत्वपूर्ण सामाजिक बदलावों को प्रेरित करती हैं या मानवीय अनुभव की नई व्याख्या प्रस्तुत करती हैं। ऐसी कई फिल्में हैं, जिन्होंने बॉक्स ऑफिस पर करोड़ों कमाए, लेकिन कुछ सालों बाद उन्हें भुला दिया गया है, क्योंकि वे किसी विशेष समय की उपज थीं। दूसरी और ऐसी फिल्में भी हैं, जिन्होंने रिलीज के समय बड़ी कमाई नहीं की, लेकिन अपनी कलात्मक गुणवत्ता, कहानी और स्थायी विषयों वाले कथानक की वजह से आज भी याद की जाती हैं और देखी जाती हैं।

कॉमर्शियली फ्लॉप पर क्लासिक 'मेरा नाम जोकर'

**कुछ कालजयी हिंदी फिल्मेंः** बॉलीवुड की कुछ फिल्में ऐसी हैं, जो अपने रिलीज के दशकों बाद भी अपना एक अलग मुकाम रखती हैं। इन फिल्मों को हर दौर में हर पीढ़ी के दर्शकों का प्यार मिला। 'कागज के फूल', 'मदर इंडिया', 'मुगल-ए-आजम', 'बॉबी', 'शोले', 'दीवार', 'उमराव जान' जैसी फिल्मों को आज भी दर्शक याद करते हैं। इन फिल्मों की गिनती बॉलीवुड के क्लासिक कल्ट के रूप में होती है। खास बात यह है कि इन फिल्मों ने व्यावसायिक रूप से भी सफलता के झंडे गाड़े थे।

कई फिल्में अपने समय में व्यावसायिक रूप से अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकीं, लेकिन बाद में उन्हीं फिल्मों को बॉलीवुड की कल्ट क्लासिक का दर्जा मिला। उदाहरण के तौर पे 'मेरा नाम जोकर' और 'सिलसिला' जैसी फिल्मों को देखा जा सकता है।

ये वे फिल्में हैं, जो सिर्फ मनोरंजन ही नहीं करतीं, बल्कि मानवीय भावनाओं, सामाजिक मुद्दों और मानवीय रिश्तों की गहरी समझ को भी प्रस्तुत करती हैं, जिससे वे हमेशा के लिए कालातीत बन जाती हैं। *